नूतन निष्काम पत्रिका

नूतन निष्काम पत्रिका □ वर्ष-5 □ अंक-८ □ मुम्बई □ अगस्त-2014 □ मूल्य-रु.9/-

स्थापना वर्ष:१९४२

मानव जीवन निर्माण में वैदिक संस्कारों का महत्व

डीम्पल केशवलाल पोकार

हृदय के वीणा से उमड़ते है, भावनाओं के झंकार,
सोलह संस्कार ही बनेंगे, मानव जीवन के अनमोल

आज के इस आधुनिक युग में मानव जीवन निर्माण में वैदिक संस्कारों का महत्त्व यह विषय बहुत ही प्रासंगिक है। जिस क्रिया से शरिर, मन और आत्मा उत्तम हो उसे संस्कार कहते है। चरक ऋषि ने कहा है ''संस्कारी ही गुणान्तराधान्मुच्यते' अर्थात पहले के विद्यमान दुर्गुणों को हटाकर सदगुणों का आधान करने को संस्कार कहते है। वैदिक संस्कृति के संस्थापकों का संस्कारों की प्रणाली को प्रचलीत करने में मनुष्य को रूपांतरित करने का स्वप्न था। इसी से जुड़ा एक ज्वलंत उदाहरण आजकल अखबारों की सुर्खियों में है। ११,००० हजार करोड और २५ कंपनियों के, ६५ वर्षिय रहेजा ग्रुप के संस्थापक ने अपने पुत्र के खिलाफ न्यायालय की शरण ली है। उनका आरोप है की, उनका पुत्र अपने बिमार पिता की देखभाल नहीं करना चाहता और उनके मरने के इंतजार में है ताकि सारी जायदाद हड़प सकें। इस सच्ची घटना से मन में यह विचार उठता है, की क्या इस पिता ने अपने पुत्र के पालन-पोषण में सभी भैतिक - सुविधाएँ उपलब्ध नहीं कराई होगी ? पर कही न कही कमी रह गई होगी और वह कमी है अच्छे संस्कारों की। हाँ, पढ़ालिखाकर उसे डॉक्टर, इंजिनियर, वकिल आदि तो आप बना लेगे किंतु एक संस्कारों से युक्त मानव जिवन देने का कोई प्रयास नहीं होगा। वैदिक संस्कृति ने मानव के नव निर्माण की योजना तैयार की है। जिसमें दो-चार ही नहीं सोलह संस्कार हैं। कुछ जन्म ग्रहण करने से पूर्व के संस्कार और कुछ जन्म लेने के बाद के। सबसे पहला संस्कार गर्भाधान संस्कार है। संतान उत्त्पति कोई आकस्मिक घटना नहीं है यह तो एक परिपूर्ण योजना है जिसमें पति-पत्नी विचार करते हैं की हमें समाज को कैसा इन्सान देना है। वैसे ही पुंसवन संस्कार जिसमें माता बच्चे के शारिरिक विकास और सीम्नंतोन्यन संस्कार जिसमें मानसिक विकास के लिए अपना रहन सहन बनाती है। इस विषय में अभिमन्यु से बेहतर उदाहरण नहीं मील सकता। सुभद्रा के गर्भ में पल रहे अभिमन्यु को श्री कृष्ण ने चक्रव्युह को भेद ने का ज्ञान दिया था। उसी ज्ञान के बलबुते नौजवान अभिमन्यु चक्रव्ह्यु के छः (६) घेरे भेद पाया। यदि संसार की माताएं इस रहस्य को समझ जाए और पश्चिमी सभ्यताके अनुकरण से बचे तो निश्चित ही एक नया मानव और समाज उत्पन्न होगा इसी से जुड़ी कवी की दो पंकतियाँ याद आ रही है।

ए मानव, अपने संस्कारों से भला दूर क्यों भागता है।
पश्चिम की तरफ जाकर तो सुरज भी डूब जाता है।

इसके बाद वे संस्कार आते है जो जन्म लेने के बाद के है। बच्चे के जन्म लेते ही सोने की शलाकासे उसकी जीभ पर 'ओ३म' लिखा जाता है और कान में 'वेदोशी' कहा जाता है। उसके व्यक्तित्व के निर्माण के लिए यह जातकर्म संस्कार किया जाता है। जन्म के ११ वें या १०१ वें दिन नामकरण संस्कार का समय है। नामकरण संस्कार के बारे में ऋषी चरक ने लिखा हैं 'तत्र अभिप्रायंक नाम' अर्थात नाम एसा होना चाहिए जिसका कोई अभिप्राय हो। जैसे की प्रेम-सागर कहाने बाला अगर लड़े-झगडे तो उसका नाम ही उसे झीड़क देगा। इन दो संस्कारों के बाद चौथे मास में निषक्रमण, छठे मास में अन्न प्रासन, तीसरे वर्षमें चुडाक्रम, पांचवे वर्षमें कर्णवेध संस्कार किये जाते है। ये सब स्वास्थय की दृष्टि से किये जाते है। जब बालक की उम्र पढ़ने लिखने की हो जाए तब उपनयन संस्कार किया जाता है। जिसमें बालक को गुरू के समीप ले जाते हैं। उन दिनों शिक्षा का मुख्य लक्ष्य ब्रह्मचार्य पूर्वक विध्या धन था। वैदिक संस्कृति कि शिक्षा के इस आधारभूत तत्व को आज की किस शिक्षा पद्धति में स्थान दिया गया है? इस के बाद वेदारम्भ संस्कार आता है जिसका अर्थ है वेदाध्यन को प्रारंभ करने का संस्कार। वैदिक संस्कृती में गुरू का उद्देश्य केवल शिक्षा देना ही नहीं था। बल्की एक सदाचारी व्यक्ति तैयार करना था। समावर्तन संस्कार में विद्यार्थीयों को सत्य का पालन करने, धर्म अनुसार आचरण करने, समाज तथा देश के हित में कार्य करने की शिक्षा दी जाती थी। मानव को उत्तम ग्रंथो का निरिक्षण करने पर बल दिया जाता था। इस से वह कभी पथभ्रष्ट नहीं होगा। जीजाबाई ने शीवाजी को बाल्यावस्था में ही श्री कृष्ण, राम, भीम आदि की कहानियाँ सुनाकर बालपन से ही वीर और साहसी बनने का संस्कार दिये थे। ग्रहस्थाश्रम के प्रवेश के समय विवाह संस्कार होता है। ग्रहस्थाश्रम का भोग भोगने के बाद भोग का छुटना अवश्यभावी है। के इस विकासोन्मुखी कार्यक्रम में यात्रा का अंतीम पड़ाव जीवन संस्कार वानप्रस्थ सन्यासाश्रम है। विश्व के कल्याण में बचा हुआ वक्त बीताकर जीवन समाप्त हो जाता है तब अंतिम संस्कार, अन्त्येष्टि क्रिया होती है और तब जाकर यह आत्मा संस्कारों की उस जकड़न में से छुटती है जिसमें वैदिक संस्कृतने इसे इस जन्म में बांध रखा था।

अत में केवल इतना ही कहना चाहती हूँ की आज कि युवा पिढी को वैदिक संस्कारों के महत्त्व को समजकर अपनी दृष्टिकोण को बदलना होगा। आज वैदिक संस्कृति के जन्मदाताओं का स्वप्न पूरा करने का समय आ गया है। अब हमें यह निश्चित करना है कि हम भौतिकवाद की चकाचौध में इन संस्कारों को भुल जायेंगे या साहस बटोरकर इन आदर्शो को अपने प्रतिदिन के व्यव्हार में उतारने का प्रयत्न करेंगे।

जैसें ग्रीष्म से तृप्त धरती,
वर्षाऋतु में होती है सुहानी।
वैदिक सोलह संस्कारों को अपनाकर
मानवजाति को खुशियाँ है मनानी।।

आर्य समाज सांताक्रुज, मुम्बई का मासिक मुखपत्र
वर्ष : ५ अंक ८ (अगस्त-२०१४)

- दयानंदाब्द : १९१, विक्रम सम्वत् : २०७१
- सृष्टि सम्वत् : १,९६,०८,५३,११५

प्रबन्ध संपादक : चन्द्रगुप्त आर्य
संपादक : संगीत आर्य
सह संपादक : संदीप आर्य
कार्यकारी संपादक : विनोद कुमार शास्त्री
लालचन्द आर्य, रमेश सिंह आर्य, यशबाला गुप्ता.

विज्ञापन की दरें : शुल्क

पूरा पृष्ठ : रु. ३,०००/- एक प्रति : रु. ९/-
१/२ पृष्ठ : रु. २,०००/- वार्षिक : रु. १००/-
१/४ पृष्ठ : रु. १,५००/- आजीवन : रु. १०००/-
विशेषांक की दरें भिन्न होंगी।

वर्गीकृत विज्ञापन
रु. १०/- प्रति शब्द, न्यूनतम रु. ५००/-

चैक /डीडी / मनी आर्डर आदि 'आर्य समाज सान्ताक्रुज' के नाम से ही भेजें, मुंबई के बाहर के चैक न भेजे। विज्ञापन सामग्री १० तारीख तक भेजें। 'नूतन निष्काम पत्रिका' का मुद्रण ऑफसेट विधि से होता है।

पता : आर्य समाज सांताक्रुज़
(विठ्ठलभाई पटेल मार्ग) लिंकिंग रोड, सांताक्रुज़ (प.),
मुंबई-५४. फोन: २६६० २८००, २६६० २०७५

अनुक्रमणिका	पृष्ठ सं.
मानव जीवन निर्माण में वैदिक.......	२
सम्पादकीय	३
अदृश्य ही सत्य है	४-५
मोटापा घटाना	६-७
भारत के जगद्गुरु होने का अर्थ व उपाय...	८-११
''वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द''	१२
विचार शक्ति का चमत्कार	१३
यज्ञ वैदिक संस्कृति की आधार शिला..	१४-१६

सम्पादकीय

आर्य समाज में विकास

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपना संपूर्ण जीवन वैदिक धर्म के लिये समर्पित किया। वेद धर्म के अनुयायियों के आग्रह पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज की स्थापना के पीछे उनका मूल उद्देश सिर्फ और सिर्फ वेद ज्ञान का प्रचार व प्रसार था। आर्य समाज में जब तक वेद ज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिये समर्पित संन्यासी/विद्वान/कार्यकर्ता अपना तन/मन/धन देकर प्रचार करते रहे तब तक आर्य समाज का प्रचार फैलता रहा। संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है---। आर्य समाज के इस छठे नियम के अन्तर्गत् आर्य समाज ने अपने कार्यों को फैलाना शुरू किया। प्रचारान्तर में यही फैलाव आज आर्य समाज के लिये सिरदर्द बनता जा रहा है। चन्दा भरकर आर्य समाज का सदस्य बनकर चंद लोग सन्ध्या-हवन-प्रवचन में कभी रूची नहीं लेते किन्तु आर्य समाज के Administration /भवन निर्माण/धन के आदान-प्रदान जैसे कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। विकास की बात करते हैं। आज भवनों की मरम्मत आदि में लाखों-करोडों रुपये का व्यय आता है। चंद व्यक्ति इन्हीं कार्यों के लिये आर्य समाज में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते हैं। आज समय आ गया है कि हम ऐसे तत्त्वों को पहचानकर अलग करें एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के मूल उद्देश्य वेद प्रचार एवं परोपकार पर ही ध्यान केन्द्रित करें।

- संगीत आर्य- 93235 73892

अदृश्य ही सत्य है

प्रो. सत्यव्रतसिद्धालंकार

(सदेव सौम्येदमग्र आसीत्)

संसार के पदार्थों को दो भागों में बाँटा जा सकता है- दृश्य तथा अदृश्य। दृश्य जो हमें दीखते हैं; अदृश्य-जो है तो, परन्तु दीखते नहीं। बहुत-सी वस्तुएँ ऐसी हैं जो हैं, परन्तु दृष्टिगोचर नहीं होतीं। न दीखने के कारण कई हो सकते है। या वे इतनी सूक्ष्म हैं कि इन्द्रियों में उन्हें देखने की शक्ति नहीं होती, या इतनी दूर है कि पास हों तव तो हम उन्हें देख सकते हैं, बहुत दूर हों तो हमारी इन्द्रियाँ वहाँ तक पहुँच नहीं सकतीं। तीसरा कारण यह भी हो सकता है कि वे हमारे इतनी पास हैं कि हमें न दीखती हैं, न हमारा ध्यान उधर जाता है।

इसका परिणाम यह होता है कि हम दृश्य को ही सत्य समझते हैं, उसे ही यथार्थ समझते हैं; अदृश्य को न सत्य समझते हैं, न यथार्थ समझते हैं। इतना ही नहीं कि अदृश्य को हम त्रसत्य तथा अयथार्थ कहने लगते है, वैयक्तिक एवं सामाजिक दैनिक व्यवहार में अदृश्य की सत्ता से ही इन्कार करने लगते है।

परन्तु तात्विक दृष्टि से देखा जाय, तो अदृश्य ही सत्य है, वही यथार्थ है, दृश्य केवल अदृश्य के सहारे टिका हुआ है, अदृश्य न हो तो दृश्य रह ही नहीं सकता। दृश्य का जीवन अदृश्य के स्त्रोत से ही प्रवाहित होता है।

छान्दोग्य उपनिषद् (६ प्रपाठक, १२वे खंड) में श्वेतकेतु की कथा आती है। उसके पिता ने श्वेतकेतु को कहा-बेटा, जाओ गुरु के पास विद्या अध्ययन करके आओ। श्वेतकेतु गुरु के पास १४ वर्ष तक विद्याधयन करके प्राया तो बड़ा पंडितम्मन्य था, समझता था, सब-कुछ पढ़ आया है। पिता ने पूछा- क्या बढ़ा? पुत्र ने कहा-सब-कुछ पढ़ लिया, अब जानेने को कुछ नहीं रहा। पिता ने पूछा- क्या वह विद्या पढ़ी जिसके जानने से सब-कुछ, जाना जाता है, फिर जानने को कुछ रहता ही नही- ''येन विज्ञातेन सर्वमिद विज्ञातं भवति''? श्वेतकेतु ने कहा- ऐसी कौन-सी विद्या है? ऐसी किसी विद्या को तो मैंने नहीं पढ़ा। पिता बोले जाओ बेटा, सामने खड़े बट वृक्ष के फल को ले आओ। वह पास खड़े से फल तोड लाया। पिता ने कहा- इसे तोड़ो। पुत्र ने तोड़ दिया। पिता ने पूछा- इसमें क्या देखते हो? पुत्र ने कहा- कुछ नहीं, कुछ बीज दीखते हैं। पिता ने कहा- जिसे तुम कुछ नहीं कहते हो, उसी में सब-कुछ है। इन छोटे-छोटे असंख्य बीजों में ही असंख्य विशाल वट-वृक्ष अदृश्य रूप से विद्यमान हैं। इसी कहानी को त्र्रागे बढ़ाते हुए श्वेतकेतु के पिता ने कहा- जाओ, सामने के तालाब में से एक लोटा पानी भर लाओ और पीओ। पुत्र बोला-पी लिया। पिता ने पूछा- कैसा स्वाद है? पुत्र बोला-कुछ नहीं, फीका-फीका। पिता ने कहा-इस तालाब में नमक का एक ढेला फेंक दो। उसने फेंक दिया। अगले दिन पूछा- देखो, तालाब में ढेला कहाँ दीखता है? पुत्र ने जाकर देखा- नमक का ढेला तो कहीं दीखता नहीं था। पिता ने कहा-इसमें से लोटाभर पानी निकालकर पीओ। पुत्र ने पीया और बोला-यह पानी तो नमकीन है। पिता ने कहा- तालाब के दायें-बायें, आगे-पीछे, बीच में से पानी लेकर चखो। उसने चखा और बोला-यह तो सब जगह नमकीन-ही-नमकीन है। पिता ने पूछा-नमक कहीं दीखता है? पुत्र ने उत्तर दिया- वह तो कहीं नहीं दीखता। पिता ने समझाया, वह नमक जो इस जल में कहीं नहीं दीखता, वह सारे जल में विद्यमान है। पिता ने एक तीसरा दृष्टान्त दिया। कहा-अपनी आँख को देखो। पुत्र ने कहा- आँख को कैसे देखू? आँख को देखने के लिए तो आँख से दूर होना होगा, दर्पण में देखना होगा। दर्पण भी आँख से सटाकर नहीं, कुछ दूरी पर रखना होगा। पिता ने समझाया-मत समझो जो नहीं दिखता, वह नहीं है; नहीं दीखता, वह नहीं है; जो नहीं दीखता वह अदृश्य होने के कारण, या सूक्ष्म होने के कारण या अत्यन्त निकट होने के कारण, या सूक्ष्म होने के कारण या अत्यन्त निकट होने के कारण दृष्टि-गोचर नहीं होता।

जो बात अदृश्य के विषय में कही; लगभग वैसी ही बात चल तथा अचल के विषय में कही जा सकता है। जो वस्तु चलायमान है, गतिशील है, वही हमें दीखती है, और उसी को हम सत्य मानते हैं। हम समझते है कि चक्की चल रही है, परन्तु हम यह नहीं समझते कि चक्की के चलने के पीछे अगर कोई न चलनेवाली वस्तु न हो तो चक्की चल नहीं सकती। दृश्य तथा अदृश्य के विषय में तो हमने कहा था कि दृश्य अदृश्य पर टिका हुआ है, सब दृश्य पहले अदृश्य होता है, इसलिए यथार्थ सत्ता अदृश्य की है, उसी से प्रवाहित होकर सारा दृश्य बनता है; चल तथा अचल के विषय में भी हमारा कहना है कि जो चलायमान हमें दीखता है वह किसी अचलायमान के सहारे चलता है। चक्की चलती है, परन्तु न चलने वाली स्थिर किल्ली के गिर्द चलती है, किल्ली न हो तो चक्की चल नहीं सकती। चक्की घूमती है किल्ली के सहारे; रथ, गाड़ी, रेल चलती है स्थिर धुरी के सहारे। अगर स्थिर न हो, अचल न हो, तो अस्थिर की सत्ता नहीं हो सकती. चलायमान की सत्ता नही हो सकती। अगर हम दृश्य की सत्ता मानते हैं तो अदृश्य की सत्ता पहले माननी पड़ेगी। अगर हम चलायमान की सत्ता मानते है तो अचलायमान की सत्ता पहले माननी पड़ेगी।

हम दृश्य को, चलायमान को सत्य समझ बैठे है, परन्तु सत्य यह है कि अदृश्य तथा अचल ही सत्य है। जो-कुछ हम समझे बैठे हैं वास्तविकता उससे उलटी है। क्या हम सदियों से यह नहीं समझते रहे कि पृथिवी टिकी हुई है, और सूर्य उसके गिर्द घूमता है? इस सत्य तक पहुँचने के लिए कि सूर्य पृथिवी के गिर्द नहीं घूमता, पृथिवी सूर्य के गिर्द घूमती है, यूरोप में गैलिलियो को जेल की यातना भोगनी पड़ी और ब्रूनो को जीते-जी आग की लपटों में भस्म हो जाना पड़ा।

अन्तिम सत्य क्या है? क्या दीखनेवाला दृश्य वृक्ष सत्य है, या बीज में भी न दीखनेवाला परन्तु फिर भी वहाँ मौजूद अदृश्य वृक्ष सत्य है? क्या तालाब के पानी में नमक के ढेले के न घुलने पर पानी का फीकापन सत्य है या पानी के कण-कण में नमक के ढेले के घुल जाने पर न दीखने के कारण पानी का नमकीन पन सत्य है?

जरा गहराई से विचार करें तो हमारे कथन का पहला परिणाम यह निकलता। है कि जो नहीं दीखता वही सत्य है, जो दीखता है वह असत्य है, दूसरा परिणाम यह निकलता है कि जो चलायमान है, अस्थिर है, परिवर्तनशील है, अस्थिर है, परिवर्तनशील है, वह चलायमान, अस्थिर

तथा परिवर्तनशील दीखना ही भर है, वास्तव में वह अचलायमान, स्थिर तथा अपरिवर्तनशील तत्त्व के आधार पर टिका हुआ है। अचल, स्थिर अपरिवर्तित तत्त्व न हो, तो परिवर्तन हो नहीं सकता; हर गति अगतिशीलता के ऊपर टिकी है।

इस विचार को व्यक्ति के शरीर तथा संसार पर घटाएँ तो जो परिणाम निकलते हैं ये क्या हैं?

व्यक्ति के शरीर पर घटाएँ तो हम देखते हैं कि व्यक्ति का शरीर दृश्य है तथा परिवर्तनशील है। ये दो गुण हर शरीर में पाये जाते है। व्यक्ति का शरीर दीखता है, स्थूल है, देखा-छुआ जाता है, शरीर बोलता है तो उसकी आवाज सुनी-सुनाई जाती है। यह दृश्य शरीर, हमारी विचारधारा के अनुसार किसी अदृश्य तत्व आश्रित होना चाहिए क्योंकि जो दृश्य है उसका आधार कोई अदृश्य है। दृश्य शरीर का जो अदृश्य आधार है, जिस अदृश्य आधार पर यह दृश्य शरीर टिंका हुआ है, उसी को आध्यात्मिक परिभाषा में ''आत्मा'' कहते हैं। शरीर दृश्य है, इसका अदृश्य आधार ''आत्मा'' है।

हमारी विचार-सारणी में व्यक्ति में दृश्य-शरीर के अतिरिक्त जो दूसरी बात पायी जाती है वह उसकी गतिशीलता या उसके शरीर में परिवर्तन है। हमारे पास दृश्य शरीर तो है, और इसलिए दृश्य शरीर अदृश्य आत्मा के सहारे टिका हुआ है, परन्तु दृश्य-शरीर के साथ एक और बात जुड़ी हुई है, वह है दृश्य-शरीर की गतिशीलता, उसकी परिवर्तनशीलता। जैसे दृश्य बिना अदृश्य के नहीं रह सकता, वैसे परिवर्तनशीलता, जिससे हम सब अवगत हैं, अपरिवर्तनशीलता के बिना नहीं रह सकती। जन्म से लेकर मृत्युपर्यंन्त हमारे शरीर में परिवर्तन होता रहता है। हमारा शरीर कभी बालपन में था, कभी युवापन में, कभी वृद्धावस्था में था। इस सतत परिवर्तनशीलता के मनकों में अपरिवर्तनशीलता का जो सूत्र पिरोया हुआ है वह अपरिवर्तित रहता है, क्योंकि उसी में तो परिवर्तन होता दीखता है। अपरिवर्तन में परिवर्तन नहीं हो सकता। यह हम पहले ही कह चुके हैं कि जब तक कोई वस्तू अपरिवर्तनीय न हो तब तक किसी प्रकार के परिवर्तन का होना सम्भव नहीं हैं।

अदृश्यता तथा अपरिवर्तनशीलता का यह गुण जहाँ पाया जाता है उसी को शरीर में 'आत्मा' कहते हैं। व्यक्ति के बाद दूसरी सत्ता प्रकृति के द्वारा निर्मित ठोस संसार में भी ये दोनों गुण पाये जाते हैं। व्यक्ति का शरीर दीखता है, प्रकृति द्वारा निर्मित संसार भी दीखता है, शरीर में परिवर्तन होता रहता है- बचपन, योवन, वार्धक्य-शरीर के ये गुण हैं, संसार में भी कण-कण में परिवर्तन होता रहता है, इसी परिवर्तन के कारण इसे संसार कहते हैं- संसरति इति संसार:। जैसे यह दृश्य-शरीर जिस अदृश्य-सत्ता पर टिका है उसे 'आत्मा' कहते हैं, वैसे यह दृश्य-जगत् जिस अदृश्य-सत्ता पर टिका है उसे 'परमात्मा' कहते हैं। जो बात दृश्यता के विषय में हमने कही वही बात परिवर्तनशीलता के विषय में कही जा सकती है। शरीर में परिवर्तन होता रहता है, उसमें सतत गतिशीलता का प्रवाह है, इसलिए शरीर की इस लगातार चलती रहनेवाली चक्की में कोई ऐसी स्थिर किल्ली माननी पड़ती है जिसके गिर्द यह चक्की चल सकती है। इसी किल्ली का नाम 'आत्मा' है। इसी तरह संसार में जो क्षण-क्षण परिवर्तन होता रहता है, यह परिवर्तन, यह सतत गति जिस गतिहीन सत्ता के आधार पर हो रही है उसी का नाम 'परमात्मा' है।

हमने देखा कि दृश्य की सत्ता को मानने के कारण हमें अदृश्य की सत्ता को मानना पड़ता है। परिवर्तन तथा गतिशीलता की सत्ता को मानने के कारण हमें एक ऐसी सत्ता को मानना पडता है जिसमें परिवर्तन नहीं है, जो गतिहीन है, स्थिर है, क्योंकि दृश्य का आधार अदृश्य है, गति तथा परिवर्तनशीलता का आधार गतिहीनता तथा स्थिरता है। इन दो बातों के अतिरिक्त एक तीसरी बात है जिसे हमें विवश होकर भी मानना पड़ता है। वह बात क्या है? इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि हमें जा कुछ दीखता है, जिस किसी वस्तु का हमें ज्ञान होता है, वह तभी होता है जब वह हमसे दूर हो। जो वस्तु हमारे अत्यन्त निकट हो, इतनी निकट कि अणुमात्र भी उसमें तथा हममें दूरी न हो तो उसका हमें दृश्य-ज्ञान नहीं होता। आँख आँख के निकटतम है, इसलिए आँख आँख को नहीं देख सकती। अगर कोई सत्ता सर्वव्यापक है, तो वह वहाँ भीहै जहाँ हम हैं। हमसे दूर हो तभी तो हम उसे देख सकें। वह जहाँ है वहाँ हम हैं, जहाँ हम हैं वहाँ वह है- फिर उसे कौन देखे और कैसे देखे? एक तो वह अदृश्य, दूसरे वह हर जगह। देखने के लिए तो दूरी होना आवश्यक है जो उसमें और हममें नहीं है।

इस सम्बन्ध में एक और बात की तरफ भी ध्यान देना आवश्यक है। जो वस्तु प्राप्त होती है उसकी तरफ मनुष्य का ध्यान नहीं जाता। जब हम स्वस्थ होते हैं तब हम जुकाम से, खांसी से, बदहजमी से, कब्ज से परेशान नहीं होते। हमें न यह खयाल होता है कि हमारे नाक है, न यह खयाल होता है कि हमारा गला है, पेट है या दूसरा कोई अंग है। अस्वस्थावस्था में ही मनुष्य का ध्यान नाक की तरफ, गले या पेट की तरफ, जाता है। दाँत सबके हैं, आँखे सबकी हैं, परन्तु जब दाँत में दर्द होता है तब मनुष्य कहता है कि उसके दाँत हैं, जब आँख में मोतिया उतरता है तब हर समय वह आँख की ही चर्चा करता रहता है। शंका की जा सकती है कि अगर अदृश्य आत्मा की सत्ता निस्संदिग्ध है, तो उसकी अनुभूति क्यों नहीं होती? अगर अदृश्य परमात्मा की सत्ता भी असंदिग्ध है तो उसकी भी प्रतीति क्यों नही होती? इसका उत्तर यही है कि जो वस्तु सर्वगत अर्थात् सर्वव्यापक है, उसकी प्रतीति नही हुआ करती, सब जगह है- इसलिए उसे कहीं ढूंढा नहीं जा सकता, ढूंढा तो तब जाय जब वह एक जगह हो, दूसरी जगह न हो।

हाँ, उसकी प्रतीति का एक समय अवश्य है। स्वस्थावस्था में मनुष्य को पता नही होता कि उसके दाँत हैं; अस्वस्थावस्था में, जब दाँत में दर्द होता है, तब पता चलता है कि दाँत है। इसी प्रकार जब मनुष्य की रुग्णावस्था होती है तब उसे प्रतीति होती है कि कोई सत्ता है जो उसकी स्वस्थावस्था को, उसके नीरोग होने को, उसकी मानसिक शान्ति को देनेवाली है। अभाव में भाव की तरफ ध्यान जाता है; दु:ख में, कष्ट में, दु:ख-निवारक, कष्ट-भंजक की तरफ ध्यान जाता है।

संसार एक विचित्र खेल है। यह दृश्य है, इसलिए अदृश्य को मानना पड़ता है; यह विनाशी है इसलिए अविनाशी को मानना पड़ता है; यह गतिशील तथा परिवर्तनशील है इसलिए गतिहीन तथा अपरिवर्तनीय को मानना पड़ता है; यह दु:खमय है इसलिए दु:ख-विनाशी को मानना पड़ता है; यह अपूर्ण है इसलिए पूर्ण को मानना पड़ता है। इसी को श्रुति ने कहा है।

स पर्यगात् शुक्रमकायमव्रण मस्नाविर शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभू: स्वयंभू: यायातथ्यतोऽर्थान् व्यदधात् शाश्वतोभ्य: समाभ्य:।।

-यजुर्वेद ४०/८

मोटापा घटाना

डॉ. गणेश नारायण चौहान

मोटापा कई बीमारियों को जन्म देता है। जैसे कि मोटापे के कारण हार्ट अटैक, ब्लड प्रेशर, थकान आदि रोग जन्म लेते हैं। खासकर महिलाओं में श्वेत प्रदर, मासिक धर्म में अनियमितता, बाँझपन, सॉस फूलना जैसे रोग होने का खतरा ज्यादा रहता है। मोटापे से गुर्दे की बीमारी, मधुमेह ग्रस्त मोटे लोगों की मृत्यु दर बढ़ती है। भारी बदन के लोगों को शल्यक्रिया के दौरान ज्यादा खतरा रहता है। गठिया जैसे रोग उन्हें जल्दी होते हैं।

शरीर का बढ़ा हुआ वजन घटना बहुत कठिन है, इसलिए वजन को बढ़ने से रोको। पुरुष के लिए ७० किलो एवं महिला के लिए ६० किलो वजन 'लक्ष्मण रेखा' है। मोटापा एक अभिशाप, मुसीबतों की जड़ है। मोटापा मौत को जल्दी बुलाता है। मोटे शरीर में मोटी बीमारियाँ, मोटी जाँच, मोटी फीस एवं डॉक्टर की जरूरत रहती है। यदि मधुर मुस्कान एवं मस्ती चाहिए तो मोटापे से मुक्ति पायें। इतना नहीं खायें कि रोगी बन जायें। कम खायें, लम्बी जिन्दगी जियें। खुराक घटाओ, घूमना बढ़ाओ, मोटापे से मुक्ति पाओ। खाना खाने का स्वभाव बदले बिना बदन का बढ़ा हुआ वजन कम करना आसान नहीं। **चखो पर चरो मत।** बदन का बढ़ा हुआ वजन बाई पास सर्जरी का वारन्ट है। बदन के बढ़े हुए वजन में यदि बुनियादी बदलाव लाना है तो बाटी, बर्फी, बादाम, ब्रेड और बिस्कुट कम-से कम खाओ, व्यायाम करो, घूमने जाओ।

शारीरिक महेनत कम करने वालों को शरीर की दैनिक क्षतिपूर्ति के लिए केवल १५०० से २००० कैलोरीवाला भोजन पर्याप्त है फिर भी ऐसे लोग ३००० से ४००० कैलोरीवाला भारी भोजन करते हैं। इस अतिरिक्त कैलोरी से शरीर में चर्बी जमा होने लगती है।

मोटापा शरीर में चर्बी जमा होने से बढ़ता है। अत: चर्बी (Fats) तथा कार्बोहाइड्रेट्स (मीठे) पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए। मोटापे से उच्च रक्तचाप, मधुमेह, जोड़ों का दर्द तथा चलने में दर्द होता है।

मोटापे के कारण– चर्बी बढ़ाने वाले चीजों के अधिक सेवन, जैसे- मॉस, घी, चावल, आलू, तली हुई चीजें, मिठाइयाँ, दानेदार चीनी, केला, अंगूर, चिकने पदार्थ मोटापा बढ़ाते हैं। दिन पै अधिक सोना, आवश्यकतानुसार शारीरिक श्रम न करना, बार-बार खाना, पाचन-शक्ति ठीक न होने से भी मोटापा बढ़ता है। मोटापे के मामलों में इसके पीछे आवश्यकता से अधिक भोजन करना सबसे बड़ा कारण होता है। मासिक धर्म कम होने से स्त्रियों में मोटापा बढ़ता है।

मोटापा घटाने के लिए भोजन कम मात्रा में लें। भोजन के स्थान पर फल, सब्जियों का सेवन, भोजन करने से एक घंटे बाद पानी पीयें, ठंडे पानी से स्नान करें। शारीरिक श्रम अधिक और कभी-कभी उपवास करें। मोटापा घटाने के लिए भोजन की इच्छा पूरी होने से पहले ही खाना बन्द कर उठ जाना चाहिए। डॉक्टरों ने कम खाने के लिए संगीत सुनने या पुस्तक पढ़ने की सलाह दी है ताकि ध्यान बँटा रहे।

किसी भी प्रकार का भोजन न करके केवल फलाहार पर कुछ सप्ताह रहना चाहिये। घी, शक्कर, चावल, मिठाई नहीं खानी चाहिये।

शरीर को सुडौल, सुन्दर बनाने और मोटापा-जनित कुरूपता को दूर करने के लिए–

(१) सन्तुलित, स्वास्थ्यवर्धक और आन्तरिक शुद्धि करने वाला भोजन करें जिससे शरीर में व्याप्त विष नष्ट हो जायें।

(२) शरीर में व्याप्त विषों को मल, मूत्र एवं पसीने द्वारा बाहर निकालें। इसके लिए कब्ज दूर करें, पेशाब अधिक हो, इसके लिए तरल पदार्थ अधिक लें। शरीर से पसीना निकालें।

(३) गहरे लम्बे श्वास लें। शरीर में ऑक्सीजन अधिक पहुँचेगी और शरीर में व्याप्त विष इससे नष्ट हो जायेंगे।

(४) नियमित व्यायाम करें। इससे शरीर सुडौल और सुन्दर बनता है, अंग विशेष पर जमी चर्बी नष्ट हो जाती है।

(५) मालिश करें। अंग विशेष में व्याप्त मोटापे पर भी मालिश करें।

(६) विश्रांति (Relaxation) – शरीर तथा मस्तिष्क-दोनों को शिथिल कर दें। इससे तनाव दूर हो जाता है, रक्त संचार बढ़ता है तथा शरीर में व्याप्त विष निकल जाते हैं।

(७) स्त्री, पुरुष दोनों भूखे पेट या खाने के पाँच घंटे बाद रस्सी कूदें।

(८) वैज्ञानिकों के अब स्लिम एंड थिन बनने के लिए एक्सरसाइज या डाइटिंग करने के बजाय सिर्फ कैल्शियम खाने पर भी जोर दिया है। कैल्शियम से एक तरह का हार्मोन रिलीज होता हे जो मेटाबोलिज्म और रक्त संचार को संतुलित करता है। इससे कैलोरीज जलती है और मोटापा अपने-आप घट जाता है। भोजन में कैल्शियम की मात्रा बढ़ायें।

वजन जानने का सरल माप दण्ड– वयस्कर होने पर लम्बाई के अनुसार एक इंच का वजन एक किलो मानना चाहिए। जैसे ५ फीट के व्यक्ति का वजन ६० किलो होना चाहिए।

मोटापा से शरीर बेडौल, भद्दा लगता है। नारियों के नितम्ब, कूल्हे (Hips) प्राय: मोटे हो जाते हैं। निरन्तर गत्यात्मकता के अभाव में नितम्ब मोटे हो जाते हैं। गत्यात्मकता की कमी से माँसपेशियाँ लचीलापन छोड़ देती है। इससे उनका आकार समाप्त होने लगता है, वे बाहर फैलने लगते हैं। नितम्ब न केवल भारी ही होते हैं अपितु आकार में भी बढ़ जाते हैं। अत: बिना चर्बी के भी नितम्ब बढ़ सकते हैं।

शरीर को गतिशील रखने एवं उचित भोजन के द्वारा ही शरीर को सुडौल रखा जा सकता है। सुडौल शरीर के लिए व्यायाम आवश्यक है। नित्य आधा घंटा तेजी से घूमने जायें, कोई व्यायाम करें। रस्सी कूदना भी बहुत अच्छा है। कोई भी व्यायाम १५ मिनट नित्य करें।

घूमना– मोटापे को एक दम नहीं घटाना चाहिए। तीन मील प्रति घंटा, प्रति दिन घूमने से एक महीने में एक किलो वजन की कमी आती है जो कि आदर्श अभ्यास है।

करेला– करेले के रस में एक नींबू का रस मिलाकर प्रात: पीने से मोटापा कम होता है।

फल-सब्जियाँ- सब्जियाँ और फलों में कैलोरी कम होती, अत: ये अधिक खायें। केला, चीकू मोटापा बढ़ाते हैं, अत: ये नहीं खायें स्वाद के लिए फल-सब्जियों पर नमक नहीं डालें। नमक कम-से कम खायें। शक्कर, चिकनाईदार चीजें जैसे घी, मक्खन, शकरकंदी नहीं खायें।

चाय- चाय में पोदीना डालकर पीने से मोटापा कम होता है।

नमक- मोटापा कम करने के लिए नमक रहित भोजन करना चाहिए। इससे वजन कम होता है।

मालिश- यदि पेट, तोंद बढ़ गई हो तो मालिश करके नित्य उठ-बैठ करें। रस्सी कूदने से पेट आगे नहीं बढ़ता।

नींबू- (१) एक नींबू स्वाद के अनुसार सेंधा नमक, एक पाव गर्म पानी में मिलाकर प्रात: भूखे पेट दो माह पीने से मोटापा कम होता है। यह प्रयोग गर्मी के मौसम में ज्यादा उपयोगी है।

(२) एक नींबू, एक गिलास गर्म पानी और दो चम्मच शहद मिलाकर चार महीने तक पीने से मोटापा कम होता है।

(३) पालक के रस में नींबू मिलाकर पीने से मोटापा कम होता है।

चना- चने की भीगी हुई दाल और शहद मिलाकर नित्य प्रात: खाने से मोटापा कम होता है।

टमाटर- जिनका भार अधिक है व अन्नाहार पर नियन्त्रण करते हैं, व्यायामों और योगासनों पर ध्यान देते है- टमाटर उनके लिए हितकारी है क्योंकि शरीर से विजातीय द्रव्य, पदार्थ व आँतों में रूका, अटका खाना शरीर से बाहर निकालने में पूरी मदद करता है। नित्य कच्चा टमाटर, नमक और प्याज के साथ खाने से आप विश्वास करें, आपका मोटापा धीरे-धीरे कम होने लगेगा।

दही- दही मोटापा कम करने में लाभप्रद है।

छाछ- छाछ में काला नमक और अजवाइन मिलाकर पीने से मोटापा कम होता है।

तुलसी- तुलसी के पत्तों का रस, शहद तथा एक कप पानी में मिलाकर पीने से मोटापा घटता है।

आलू- आलू मोटापा नहीं बढ़ाता। आलू को तलकर तीखे मसाले, घी आदि लगाकर खाने से चिकनाई पेट में जाने से मोटापा बढ़ता है। इसलिए आलू उबाल कर या गर्म रेत, राख में सेंक कर खाना लाभदायक है, निरापद है।

कुलथी- १०० ग्राम कुलथी की दाल नित्य खाने से मोटापा कम होता है।

रस- मोटापा घटाने के लिए सात दिन में एक बार केवल रस, फलाहार पर ही रहें, इस दिन रोटी, दूध आदि नहीं लें।

पीपल- चार पीपल पीसकर आधा चम्मच शहद में मिलाकर नित्य चाटें। इससे मोटापा घटता है।

सलाद

सामग्री- दो-तीन तरह के मौसमी फल, सलाद पत्ती, मूली, गाजर, पत्ता गोभी, अदरक, हरी मिर्च, हरा धनिया, नींबू, भिगोये हुए काले चने, काली मिर्च और सेंधा नमक सब अन्दाज से और आवश्यक मात्रा में।

विधि- सलाद पत्तियों और गोभी के पत्तों को धो कर प्लेट में फैला कर रखें। फलों को काटकर इन पत्तियों पर रखें। टमाटर को गोल काटकर तथा, गाजर व अदरक के बारीक लच्छे काटकर इन फलों पर फैला दें और चने डाल दें। ऊपर से हरी मिर्च और हरा धनिया काटकर बुरक दें। नींबू निचोड़कर काली मिर्च व सेंधा नमक डालें। यह सलाद बहुत स्वादिष्ट और पोषक तत्त्वों से युक्त है। इसे भोजन के साथ खाएँ या दोपहर के बाद की चाय के साथ खाएँ या फिर भोजन न करके इस सलाद को ही भोजन की जगह भूख के अनुसार मात्रा में खूब चबा-चबा कर शाम को खाएँ।

जिन्हें अपने पेट, कमर और कूल्हों का मोटापा दूर करना हो वे शाम के भोजन में सिर्फ इस सलाद को ही खाएँ और टमाटर व पालक का सूप बनाकर पिएँ। ४० दिन बाद अपना वजन देख लें। इस उपाय से जितना चाहें उतना वजन कम किया जा सकता है। वजन धीरे-धीरे कम होगा पर निश्चित रूप से होगा। परीक्षित है।

मिश्रित रस- एक नींबू, गर्म पानी में प्रात: पीयें। इसके बाद १२ औंस गाजर का रस और ४ औंस पालक का रस मिलाकर पीयें। इससे मोटापा कम होता है।

पानी- (१) जिनका शरीर मोटा हो गया है, उन्हें सदा गुनगुना पानी अधिक मात्रा में पीना चाहिए। भोजन से पहले एक गिलास गुनगुना पानी पी लिया जाय तो भोजन अधिक नहीं किया जा सकता। इस प्रयोग से दो महीने में चर्बी घटने लगेगी। डॉ. ल्यूकस की राय में सर्वोत्तम तरीका यह है कि तीन गिलास पानी में चुटकी भर नमक डालकर उबाल कर रख लिया जाये और इस पानी का एक गिलास प्रात: भूखे पेट, दोपहर एवं रात को सोने से पहले पीयें।

(२) खाना खाने के बाद एक गिलास गर्म पानी जितना गर्म पिया जा सके लगातार पीते रहे।

कमर पतली करने का व्यायाम

कमर पतली करने के लिए सीधे लेट जाइए। हाथ जाँघों पर रखें। फिर अपनी टाँगें जमीन से ६-७ इन्च ऊपर उठायें। फिर इसके बाद कन्धे भी जमीन से इतने ही उठाएँ एवं टाँग एवं कन्धे जितनी देर निभे ऊपर रखें। इस व्यायाम में हाथ जमीन को नहीं छूने चाहिएँ।

एक व्यायाम में सीधे खड़े होकर पैर पास-पास रखिए। अब कमर पर हाथ रख कर दायें पैर को ऊपर उठाइये-अधिक-से-अधिक जितना उठा सकें। बदन को मत झुकने दीजिए। पैर को बिल्कुल सीधा रखने का प्रयास कीजिए चार-पाँच सैकण्ड तक पैर उसी तरह रखिये। फिर नीचे ले आइए। यह दस बार कीजिए। इसी तरह बायें पैर की दस बार कसरत किजिए। अधिक-से-अधिक पैदल चलने से नितम्ब सुडौल होते हैं।

पेट- प्रतिदिन हथेली की सहायता से पेट के माँस को नीचे से ऊपर की ओर ले जाना चाहिए। यह क्रिया कम-से-कम दस मिनट तक करनी चाहिए। इस तरह मालिश करने से आपके पेट पर फालतू चर्बी नहीं बढ़ने पाएगी। इसी प्रकार कमर एवं जाँघां पर भी चर्बी नहीं बढ़ने देनी चाहिए।

क्या खायें और क्यों? से साभार

।।ओ३म्।।

भारत के जगद्गुरु होने का अर्थ व उपाय क्या है?

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

सोलहवी लोकसभा के चुनाव ने भारत को एक महान् देशभक्त नेतृत्व **श्री नरेन्द्र मोदी** के रुप में प्रदान किया है, जिन्होंने काशी में भारत को जगद्गुरू बनाने की इच्छा का संकेत करते हुए कहा था, **"जब भारत जगद्गुरू था तब काशी नगर राष्ट्रगुरु था और यदि भारत को पुन: जगद्गुरू बनाना है तो काशी को राष्ट्रगुरु बनाना होगा।"** काशी को राष्ट्रगुरू बनने का संकेत स्पष्ट है कि भारत की प्राचीन वैदिक विरासत व देववाणी संस्कृत भाषा का पुनरोदय होने से ही यह राष्ट्र पुन: जगद्गुरू बन सकता है। इधर श्री मोदी के मन्त्रिमण्डल की एक सदस्या श्रीमती स्मृति ईरानी जिन पर भारत के मानव संसाधन विकास मंत्रालय का बहुत महत्त्वपूर्ण दायित्व है, ने वैदिक साहित्य पढ़ाने की वकालत की है। यह देश के लिए बहुत ही शुभ संकेत है। यहाँ कुछ कथित प्रबुद्ध जनों को श्री मोदी के कथनों में परस्पर विरोध प्रतीत हो सकता है। उनकी दृष्टि में मोदी जी एक ओर अत्याधुनिक विज्ञान, तकनीक के द्वारा राष्ट्र को अमेरिका, चीन व यूरोपीय देशों की बराबरी पर लाने की बात करते हैं तो दूसरी ओर वे भारत की प्राचीन परम्परा के पुनरोदय की बात करते हैं। क्या यह परस्पर विरोध नहीं है?

अंग्रेजी भाषा के एकछत्र विश्वव्यापी शासन तथा वर्तमान विज्ञान व टैक्नोलोजी के इस युग में वेदादि की बात करना कहाँ तक युक्ति संगत है, वह भी वेदादि शास्त्र व संस्कृत भाषा के बल पर भारत को विश्व का गुरू बनाने का स्वप्न देखना व दिखाना कहाँ तक उचित है, यह अवश्यमेव विचारणीय है। वर्तमान विश्व में तो दूर की बात है, अपने देश में भी इस प्रकार की बातों पर प्रबुद्ध वर्ग विश्वास नहीं करता। मेरी दृष्टि में इसके दो कारण हैं। प्रथम यह कि **भारत का नागरिक विशेषकर प्रबुद्ध युवा तन से भारतीय तथा मन व आत्मा से पूर्णत: मैकाले का भक्त हो चुका है। उसे भारतीयता की वह कोई बात अच्छी नहीं लगती जो पूर्व काल की संस्कृति, सभ्यता व शिक्षा की समर्थक हो। दूसरा कारण यह भी है कि भारती वैदिक विद्या वा संस्कृत भाषा की वकालत करने वालों ने कोई ऐसा महत्वपूर्ण चमत्कार वर्तमान समय में नहीं किया, जिसे पाश्चात्य विद्या विज्ञान के सम्मुख कुछ भी महत्व मिल सके।** बड़े-२ कथित वैदिक विद्वान्, संस्कृत भाषा के पण्डित, दर्शनाचार्य सभी पाश्चात्य विज्ञान व टैक्नोलोजी के सम्मुख नतशिर होकर उनका सगर्व प्रयोग कर रहे हैं। वेद, दर्शन आदि का नाम लेकर जो संस्थाएं चल रही हैं, जिन विद्वानों की आजीविका चल रही है, उनके बच्चे भी संस्कृत वा वैदिक विद्या को नहीं पढ़ते। पिता वा गुरु व नेता संस्कृत भाषा व आर्ष विद्या की बात तो करते हैं परन्तु पुत्र, शिष्य व अनुयायी अंग्रेजी भाषा व पाश्चात्य मैकाले की शैली की शिक्षा न केवल देश अपितु विदेश में जा-जाकर ग्रहण करते है, तब वेदादि शास्त्रों व संस्कृत भाषा को कौन पढ़ेगा और कैसे इससे भारत को विश्व के उच्च विकसित विज्ञान का गुरु बनाया जा सकेगा? यह बात गम्भीरता से सोचने का अवसर किसी के पास नहीं है। यदि श्री मोदी आधुनिक विज्ञान व टैक्नोलोजी का बहु आयामी विकास करके स्पर्धा में चीन, अमेरिका, फ्रांस, जपान व जर्मनी जैसे विकसित देशों से आगे जाकर भारत को जगद्गुरु बनाने की बात करते हैं, तब भी जगद्गुरु का स्वप्न पूर्ण नहीं होगा। **भले ही हम स्वच्छ प्रशासन, प्रबल पुरुषार्थ व भ्रष्टाचार मुक्त समाज बनाकर विश्व में सर्वोत्कृष्ट कम्प्युटर, अन्तरमहाद्वीपीय मिसाइलें, परमाणु बम, हाइड्रोजन बम, न्यूट्रॉन बम जैसे घातक अस्त्र बना लें। ऐलोपैथी चिकित्सा, अन्तरिक्ष विज्ञान, कृषि विज्ञान आदि में हम क्रान्तिकारी विकास करके भारत की शिक्षा पद्धति को उच्चतम शिखर पर पहुँचा कर ऐसे विश्वविद्यालयों, आई.आई.टी. आई.आई.एम. व ऐम्स जैसे शिक्षण संस्थानों को विश्व के सर्वोत्कृष्ट स्थान दिलाने में कभी सफल हो जायें। हमारा 'इसरो' अमरीकी अंतरिक्ष एजेंसी 'नासा' को पीछे छोड़ दे और भले ही हम विश्व की सबसे बड़ी प्रयोगशाला 'सर्न' से बड़ी प्रयोगशाला बना कर संसार के सभी देशों के मार्ग दर्शक व नेता बन जायें परन्तु नैतिकता की दृष्टि से भारत को जगद्गुरू बनने हेतु यह पर्याप्त योग्यता व सामर्थ्य नहीं होगी।** आज भारत को आर्थि महाशक्ति व आध्यात्मिक महाशक्ति भी बनाने की चर्चा कुछ उत्साही महानुभाव विभिन्न चैनलों से करते रहते हैं परन्तु मुझे लगता है कि जगद्गुरु, महाशक्ति, आध्यात्मिक व वैदिक सम्पदा इन चार शब्दों का यथार्थ भाव अभी तक समझा नहीं गया है। सस्ते सुन्दर स्वप्न देखने व दिखाने से भारत जगद्गुरू नहीं बन पायेगा। हाँ, मैं मोदी जी सहित ऐसे सभी देशभक्तों की इच्छा व प्रयास की सराहना अवश्य करता हूँ कि देश में ऐसा एक प्रधानमंत्री तो बना जो देश के उत्कर्ष की, उसे जगद्गुरु बनाने की बात तो करता है। प्रबल इच्छा तो करता है। जब देश के नेतृत्व की प्रबल इच्छा हो और ईमानदारी से अफसरशाही उस पर अमल भी करे, देश की जनता पूर्ण सहयोग करे तो भारत का जगद्गुरु बनना असम्भव तो नहीं है।

अब मैं उपर्युक्त उस बिन्दु पर आता हूँ कि देश को महान् वैज्ञानिक व आर्थिक शक्ति बनाने पर भी जगद्गुरु का पद हमारे देश को क्यों नहीं मिल सकता? इस विषय में मेरा मत है कि हम इन क्षेत्रों में जो भी उन्नति करेंगे, जो भी पढ़ेंगे वा पढ़ायेंगे, उन सब पर पश्चिमी वैज्ञानिकों व अर्थशास्त्रियों की ही छाया होगी। उन्हीं का ही पढ़ेंगे फिर भले ही हम उनसे आगे क्यों न बढ़ जायें। आज **हमारी पीढ़ी जो भी पढ़ रही है, उसमें आयुर्वेद, हिन्दी, संस्कृत भाषा के अतिरिक्त कोई भी ऐसा विषय नहीं है, जिसका मूल प्राचीन भारतीय विद्या से सम्बन्ध हो, जिनकी पाठ्य पुस्तकों में प्राचीन भारतीय विद्वानों, ऋषियों का नाम भी विद्यमान हो।** हाँ,

राजनीति शास्त्र व समाजशास्त्र आदि की कुछ पुस्तकों में भगवान् मनु आदि का नाम मिल सकता है। वर्तमान विद्वानों में महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानन्द आदि का नाम मिल सकता है। विज्ञान की पुस्तकों में सी.वी. रमन, सत्येन्द्रनाथ बोस, मेघनाथ साहा, होमी भाभा, जगदीशचन्द बसु आदि भारतीय वैज्ञानिक तथा विदेश में रहने वाले भारतीयों में से चन्द्रशेखर सुब्रह्मण्यम, हरगोविन्द खुराना आदि कुछ वैज्ञानिको के नाम व उनके सिद्धान्त हम पढ़ सकते हैं परन्तु इनके वैज्ञानिक बनने के पीछे कोई भारतीय प्राचीन विज्ञान कारण नहीं था बल्कि ये उसी विद्या को पढ़े थे, जिसको हमारे देशभक्त मैकाले की पाश्चात्य शिक्षा पद्धति नाम देकर निन्दा करते हैं। भारत में जो भी देशभक्त वा वेदभक्त कहाने वाले सामाजिक संगठन हैं, वे अपने विद्यालयों में वही पढ़ाते हैं, जिसकी वे मंच पर निन्दा करते हैं। **आज वेद, दर्शन, ब्राह्मणग्रन्थ आदि का जो स्वरूप भारत में पढ़ा वा पढ़ाया जा रहा है, क्या उसके आधार पर हम ऐसे वैज्ञानिक उत्पन्न कर सकते हैं? यदि नहीं तो भारत को कैसे जगद्गुरु बनाया जा सकता है? ऐसी स्थिति में यह विचार करना. आवश्यक है कि भारत के जगद्गुरु होने का अर्थ क्या है?** इस विषय पर मेरा विचार यह है कि भारत के जगद्गुरु का अर्थ जानने से पूर्व हम यह जानने का प्रयास करें कि **भारत के भारत होने का अर्थ क्या है, आज भारत भारत रहा ही कहाँ है? वह तो आज इण्डिया बन चुका है।** पहले यह आर्यावर्त था फिर भारत फिर हिन्दुस्तान और अब इण्डिया बन गया। हिन्दुस्तान तक भी यह भारत स्वदेशी विचारधारा की नींव पर खड़ा था परन्तु अब यहाँ स्वेदेशी कुछ भी दिखाई नहीं देता। इस देश का नाम जब आर्यावर्त था तब यह देश वास्तव में जगद्गुरु था व चक्रवर्ती राष्ट्र भी था। जब चन्द्रवंशी सम्राट् दुष्यन्त पुत्र भरत का इस देश में शासन था तब भी यह भारत जगद्गुरु व चक्रवर्ती राष्ट्र था। इसी महान् राजा के नाम से इस देश का नाम भारत है, ऐसा सर्वविदित है। महाभारत काल तक भी भारत के पास यह पद विद्यमान था। आज हम जिन नालंदा व तक्षशिला व विश्वविद्यालयों की बात करते हैं। ये सभी महाभारत काल से बहुत काल पश्चात् के हैं। इस कारण उस समय की विद्या इस देश के आदिकाल से लेकर महाभारत काल की विद्या की अपेक्षा अति न्यून थी। यद्यपि इस मध्यकाल में आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, नागार्जुन एवं ब्रह्मगुप्त जैसे अनेक वैज्ञानिक व गणितज्ञ हुए जो अपने समय के विश्व विख्यात व्यक्ति थे। काल के संस्कृत भाषा के कवि व साहित्यकारों का मेरी दृष्टि में कोई महत्व इस कारण नहीं है क्योंकि ये सभी भले ही भाषा व व्याकरण के विद्वान् थे परन्तु सभी ने श्रृंगार रस में डूबकर भारत व मानवजाति को अश्लीलता की कीचड़ में ही धकेला है। गाली संस्कृत भाषा में दी जाये अथवा हिन्दी या अंग्रेजी में परन्तु है तो अपराध ही। इन साहित्यकारों के हृदय में वेद व ऋषियों के सदाचार व ब्रह्मचर्य की शिक्षा नहीं होने से हर सदाचारी को इन्हें हेय दृष्टि से ही देखना चाहिए।दुर्गाग्य से आज संस्कृत साहित्य के नाम पर यही अपराध किया जा रहा है, जिससे संस्कृत भाषा का स्थान देववाणी के रूप में रहा ही नहीं है। इस कारण मेरा मत यह है कि जब तक भारत रामायण व महाभारत कालीन आर्य ऋषियों, देवों के महान् विज्ञान व तकनीक का विकास नहीं करेगा, उसे खोज नहीं सकेगा, तब तक हम भारत को जगद्गुरु बनाने का स्वप्न भी नहीं देख सकते। उस समय आयुर्वेद का जो उत्कर्ष था, वह आज की अत्यन्त विकसित ऐलोपैथी चिकित्सा पद्धति में भी नहीं है। युद्धरत योद्धाओं के घाव तत्काल भरने त्वचा का रंग रूप तत्काल ही पूर्ववत् करने की पद्धति आज कदाचित् विकसित नहीं है। श्रीराम व लक्ष्मण को नागपश से मुक्त करने हेतु महान् आयुर्वेदाचार्य गरुड़ ने केवल हाथ के स्पर्श से न केवल उन्हें मूर्छा से मुक्त किया अपितु उनके घाव भरकर त्वचा को भी पूर्ववत् तत्काल ही कर दिया था। आज रैकी चिकीत्सा पद्धति अवश्य है परन्तु इतनी त्वरित गति से चिकित्सा करना उसका सामर्थ्य नहीं है। समय योद्धाओं को चिकित्सालय में महीनों भर्ती रहने का कहीं वर्णन नहीं है। रावण के पुष्पक विमान की यह विशेषता कि विधवा के बैठने पर विमान उड़ ही नहीं पाता था, यह कौन सी तकनीक थी? **वायव्य अस्त्र, आग्नेय अस्त्र, पर्जन्य अस्त्र, मोहिनी अस्त्र, वैष्णवास्त्र, आसुर अस्त्र, माहेश्वर अस्त्र, ऐन्द्रास्त्र, पाशुपत अस्त्र, ब्रह्मास्त्र, सुदर्शन चक्र, वज्र आदि अस्त्र न केवल महाशक्तिशाली थे अपितु इनमें से कुछ प्रयोक्ता के विचारों का अनुसरण करते हुए सीमित वा व्यापक लक्ष्य निर्धारित करने की दैवी तकनीक से सम्पन्न भी थे। यह तकनीक आज नहीं है** कि अणुअस्त्र को इस विचार से छोड़ा जाये कि वह एक लक्षित व्यक्ति का ही विध्वंस करेगा, अन्य को कोई हानि नहीं पहुँचायेगा। महात्मा नारायण का नारायणास्त्र जिसका प्रयोग अश्वत्थामा ने पाण्डवों पर किया था, वह निरस्त्र होकर शान्त खड़े रहने पर कोई क्षति नहीं पहुँचाता था और उसका सामना करने पर उग्रतर होता जाता था तथा प्रत्येक के द्वारा पुन: प्रयुक्त नहीं किया जा सकता था, यह आर्यों की तकनीक अब किस देश के पास है? देवों, गन्धर्वों, असुरों की विमान विद्या की समता आज कौन सा देश कर सकता है? उस समय प्रत्येक अस्त्र का प्रतिरोधक अस्त्र होता था। आज वह किस देश के पास है? पिछले कुछ वर्ष पूर्व जयपुर के ऑयल डिपो में आग लगी और भारत के पेट्रोलियम मंत्री ने असहाय होकर कहा था कि हम आग के स्वत: शान्त होने की प्रतीक्षा ही कर सकते हैं। आज देश के पास आर्यों का पर्जन्य अस्त्र होता तो तत्काल वृष्टि कराके आग को रोक सकता था। **जापान के पास एण्टी एटम बम होता तो वहाँ महाविनाश नहीं होता। आर्यों के अस्त्र शत्रु को मारकर वापिस भी आ सकते थे। प्रक्षेपण के पश्चात् योद्धा यदि चाहता तो वापिस भी लौटा सकता था, आज यह तकनीक किस देश के पास है?** हम रामायण व महाभारत में कहीं यह नहीं पढ़ते कि इन विशाल युद्धों के पश्चात् पर्यावरण का प्रदूषण होकर कोई महामारी वा प्राकृतिक प्रकोप फैला हो। कौन सी टैक्नोलोजी थी कि महाविध्वंसकारी अस्त्रों के प्रयोग से लाखों जान जाने पर भी पर्यावरण पर कोई प्रभाव नहीं होता था। आकाश गमन करना, रूप बदलना, अदृश्य होना, लघु व विशाल रूप धारण करना, आदि जैसी सिद्धियों का होना कुछ समाजों में विशेषकर देवों, गन्धर्वों, असुरों, वानरों में साधारण बात थी। महर्षि पतंजलि के योगसूत्रों व उनके महर्षि व्यास भाष्य से इनका वैज्ञानिक आधार परिलक्षित होता है, कोई इन्हें गम्भीरता से पढ़ने का यत्न तो करे।

आज योग का यथार्थ स्वरूप कहीं लेशमात्र भी दिखायी नहीं देता। उस समय अध्यात्म व पदार्थ विज्ञान दोनों ही उत्कर्ष पर थे, तब यह देश जगद्गुरु भी था और चक्रवर्ती सम्राट भी।

अब हम विचार करते हैं कि इस सबका मूल कारण क्या था? **वस्तुतः हर देश व समाज को उत्कर्ष वा अपकर्ष तक पहुंचाने में सबसे बड़ा योगदान शिक्षा प्रणाली का ही होता है। उस समय सभी प्रकार का सदाचार ज्ञान, विज्ञान व तकनीक वेद, ब्राह्मणग्रन्थ, दर्शन, उपनिषदों से ही उत्पन्न थी। ऋषि भगवन्त साधना के द्वारा सृष्टि के सूक्ष्म रहस्यों तथा ब्रह्माण्ड में विचरती वेद की ऋचाओं के रहस्यों को प्रकट उन्हें प्रयोगात्मक रूप देकर नाना प्रकार की दिव्य तकनीक को जन्म देते थे।** वे जहाँ उच्च कोटि के योगी, तपस्वी हुआ करते थे, वहीं वे अनेक शस्त्रास्त्र व विमान विद्या में पारंगत होकर राष्ट्र व विश्व की सम्पूर्ण परिस्थिती पर सूक्ष्म दृष्टि रखकर क्षत्रियों को पूर्ण मार्गदर्शन व शस्त्रास्त्र प्रदान करते थे। उस समय वेदादि शास्त्रों को समझने की जो परम्परा थी, वह महाभारत के पश्चात् मानो लुप्त हो गयी और धीरे-२ वेदार्थ करने की परम्परा के स्थान पर केवल वेदपाठ मात्र आजीविका का साधन बन गया। हाँ, यह भी बात सत्य है कि वेदपाठियों ने भी वेद को अब तक सुरक्षित रखा, इसलिए सम्पूर्ण मानवजाति उनकी भी ऋणी है। वेद, ब्राह्मणग्रन्थ, अरण्यकग्रन्थ आज भी इस देश में विद्यमान हैं परन्तु इनको समझने की परम्परा लुप्त हो जाने से कोई विद्वान् भाष्यकार प्राचीन ऋषियों के ज्ञान विज्ञान व तकनीक को संकेत मात्र भी जान नहीं पाया है। **वेद भाष्यकारों में केवल महर्षि दयानन्द सरस्वती ही ऐसे दिखायी देते हैं, जिन्होंने महाभारत के बाद लुप्त वेदार्थ की परम्परा को समझा परन्तु समयाभाव के कारण वे अपना वेदभाष्य सांकेतिक ही कर सके। उन्होंने अपने सत्यार्थ प्रकाश में न केवल आर्यावर्त भारतवर्ष के वर्तमान पतन के साथ प्राचीन ऐश्वर्य का वर्णन किया है अपितु वैदिक आर्ष विद्या का ऐसा पाठ्यक्रम भी प्रस्तुत किया है, जिसके आधार पर भारत पुनः सच्चा जगद्गुरु व चक्रवर्ती राष्ट्र बन सके** परन्तु दुर्भाग्य यह है कि इड़ पाठ्यक्रम को न तो पढ़ने वाले रहे, न पढ़ाने वाले और न ही इन शास्त्रों के गूढ़ रहस्य को समझने समझाने की वह वैज्ञानिक पद्धति, आत्म साधना व तप ही रहे, जो इन शास्त्रों को समझ कर विश्व के आधुनिक विज्ञान की चकाचौंध को अपने वैज्ञानिक उत्कर्ष से प्रभावित व मार्गदर्शित कर सके। कहीं-२ कुछ गुरुकुलों में कुछ ग्रन्थों का पठन-पाठन चल रहा है परन्तु प्रतीत होता है कि इस परम्परा का बाह्य आवरण मात्र शेष है, अन्दर से नितान्त रिक्तता है, अन्यथा वेदविद्या विज्ञान आज कुछ तो करके दिखाता। इस अभागे हिन्दू समाज ने तो वेद के स्थान पर केवल गीता वह भी पाठमात्र, वाल्मीकि रामायण के स्थान पर रामचरित मानस, सच्चे पुराण शतपथ-ऐतरेय आदि ब्राह्मण ग्रन्थों के स्थान पर भागवत आदि नवीन पुराणों को ही अपने धर्म व विद्या के ग्रन्थ मान लिया। उस पर **पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली, खानपान, वेषभूषा, जीवनशैली का ऐसा रोग लगा कि स्वदेशीय स्वाभिमान, धर्म, संस्कृति एवं विद्या सब भस्म हो चुके हैं।** तब माननीय प्रधानमंत्री जी! कैसे जगद्गुरु बनायेंगे, आप इस देश को?

अस्तु, महर्षि दयानन्द के पश्चात् आर्य समाज के एक विद्वान् पं. भगवद्दत्त रिसर्च स्कॉलर ने वैदिक विज्ञान की परम्परा को समझने का प्रयास किया और अपने साहित्य में कुछ संकेत भी दिये। यदि इन दोनों विद्वानों को छोड़ दें तो आचार्य सायणादि के वेद भाष्य के आधार पर कोई प्राचीन वैदिक ज्ञान विज्ञान जानकर भारत को जगद्गुरु बनाने का स्वप्न देखता है, तो वह दिवास्वप्न ही होगा। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि इन भाष्यकारों ने वैदिक ज्ञान विज्ञान का विनाश करके पशुबलि, हिंसा, यौन अपराध, मांसाहार आदि को इस संसार में फैलाने में भारी योगदान दिया है। वेद एवं ब्राह्मण ग्रन्थों का विज्ञान समझना आज असम्भव सा हो गया है। महर्षि दयानन्द के कुछ काल पश्चात् जयपुर के राज पण्डित पं. मधुसूदन ओझा एवं पं. मोतीलाल शास्त्री ने ब्राह्मण ग्रन्थों पर विशाल साहित्य रचा परन्तु रहस्यमय विज्ञान के नाम पर लिखा गया, उनका सम्पूर्ण वाङ्मय विज्ञान से सर्वथा शून्य है क्योंकि पं. मोतीलाल शास्त्री ने स्वयं अपने ग्रन्थ 'दिग्देशकालस्वरूप मीमांसा' पुस्तक के पृष्ठ ४३७ पर आचार मीमांसा प्रकरण में लिखा है- "वैदिक विज्ञान का आज के भूत विज्ञान से कुछ भी तो साम्य नहीं है।" यह बात तो उचित है कि वैदिक विज्ञान की परम्परा व क्षेत्र वर्तमान विज्ञान से कुछ पृथक् है परन्तु कोई भी साम्य न होना यह दर्शाता है कि ऐसा वैदिक न तो कभी प्रयोगात्मक हो सकता है और न ही कभी इसका ब्रह्माण्ड के विषय में हो रहे विभिन्न प्रेक्षणों व अनुसंधानों से कोई सम्बन्ध है, तब इससे कोई तकनीक विकसित करना तो सर्वथा दूर की बात है। ऐसी स्थिति में वैदिक भूत विज्ञान क्या केवल वाग्विलास की वस्तु है वा ग्रन्थों की शोभा व मिथ्या आत्म प्रशंसा, वेद प्रशंसा व भारतीय ज्ञान विज्ञान की मिथ्या कथा का साधन? तब इस कोरे कल्पित विज्ञान का मानव जीवन के लिए क्या उपयोग है? यदि वैदिक विज्ञान यही है तो उसे मानने व जानने का कोई अर्थ ही नहीं है। मेरी दृष्टि में हर विज्ञान तीन चरणों में विकसित होता है- **१. मूलभूत भौतिक विज्ञान २. प्रयोगात्मक व प्रक्षेणात्मक विज्ञान ३. तकनीक में परिवर्तित विज्ञान।** मानवजाति के प्रत्यक्ष उपयोग में आने वाला तकनीकी विज्ञान ही है परन्तु इनकी नींव मूलभूत विज्ञान ही है और तना, शाखा व पत्तियां हैं, प्रयोग व प्रेक्षण में उपयुक्त होने वाला विज्ञान। यदि कोई विद्या इन तीनों में से एक भी श्रेणी में नहीं आती है तो वह पदार्थ विद्या कहाने योग्य ही नहीं है। इसी कारण **मैंने वैदिक विज्ञान की लुप्त परम्परा को खोजने व समझने का बीड़ा उठाया है।** मैं आधुनिक भौतिक विज्ञान को भी समझने का यत्न कर रहा हूँ। **भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई एवं टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फण्डामेण्टल रिसर्च, मुम्बई में वर्षों से जा जाकर तथा आधुनिक भौतिक विज्ञान की उच्च स्तरीय पुस्तकों का अवलोकन करके वर्तमान भौतिक विज्ञान की समस्याओं, न्यूनताओं को जानने का प्रयास किया है। जोधपुर की रक्षा प्रयोगशाला एवं राष्ट्रिय भौतिकी प्रयोगशाला दिल्ली के निदेशक स्तर के भौतिकविदों से व्यापक**

चर्चा की है। **सौर वेधशाला उदयपुर एवं इण्डियन सायंस एकेडमी के भौतिक विज्ञानियों की पर्याप्त संगति की है। भारत के विशेष प्रतिभाशाली सृष्टि विज्ञानी प्रो. ए.के. मित्रा, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई से पिछले दस वर्षों से सतत सम्पर्क रहा है।** उनके अनुसंधान व मेरे विचार कई दृष्टि से मिलते भी रहे हैं। इस कारण वे मुझसे बहुत निकट व आशा भी रखते हैं। अन्य भी कई प्रख्यात वैज्ञानिक मुझसे आश्वस्त हैं। मैने निष्कर्ष यह निकाला है कि वर्तमान भौतिक विज्ञान अत्यन्त विकसित होते हुए भी अनेक गम्भीर समस्याओं से ग्रस्त है। **बिग बैंग मॉडल, ब्लैक होल, क्वाण्टम फिजिक्स, गुरुत्व बल, स्पेस, टाइम, बल की अवधारणा, फैलता ब्रह्माण्ड तथा मूल कण ये गम्भीर समस्यायें हैं।** पता नहीं क्यों संसार भर का मीडिया भी बिग बैंग मॉडल व ब्लैक होल तथा स्टीफन हॉकिंग को इतना महत्व देता है? भारतीय खगोलशास्त्री डा. ए. के. मित्रा ने सन् २००४ में ही ब्लैकहोल का खण्डन किया तथा मैंने भी ब्लैक होल विशेषकर बिग बैंग का खण्डन २००४ में किया। हॉकिंग साहब को पत्र भी भेजा। मित्रा साहब के अनेक लेख भी प्रकाशित हुए उन्होंने ब्लैकहोल के स्थान पर ईको मॉडल स्थापित किया परन्तु भारतीय मीडिया भी शान्त रहा। अन्त में स्टीफन हॉकिंग ने कहा ब्लैक होल नहीं होता तो भारतीय मीडिया भी बोल उठा। मैंने हॉकिंग को पत्र लिखा, उसकी कापी भारतीय मीडिया को दी गयी परन्तु कोई प्रभाव नहीं। यदि ए.के. मित्रा विदेश में होते तो उन्हें कदाचित् नोबल पुरस्कार मिल गया होता परन्तु अपना तो देश इण्डिया है। मेरे कहने का तात्पर्य है कि भारत में भारतीयों का सम्मान है ही नहीं। हाँ, **अब श्री मोदी जी के नेतृत्व से मित्रा जी को भी आशा है और मुझे भी कि भारतीय स्वाभिमान जीवित होगा।**

पाठकगण! मैं विशुद्ध वैदिक विज्ञान की बात कर रहा हूँ, रामायण, महाभारत कालीन वैदिक विज्ञान व टैक्नोलोजी की बात कर रहा हूँ। तब **मेरी बात वर्तमान परिवेश में समझ में आना अत्यन्त दुष्कर लगता है। आज रामायण व महाभारत के विज्ञान को भारत का अधिकांश प्रबुद्ध वर्ग कल्पना मान रहा है।** दुर्भाग्य यह है कि कुछ कथित वैदिक विद्वान् भी इन्हें कहानियां ही मान रहे हैं। हाँ, यह बात भी सत्य है कि इन ग्रन्थों में कुछ ऐसे प्रक्षेप भी हैं, जो इन ग्रन्थों को कल्पित व दूषित सिद्ध करते हैं परन्तु हर अज्ञेय बात को प्रक्षेप बताने का भी रोग बढ़ता जा रहा है। **जब तक मैं वैदिक विज्ञान के कुछ सिद्धान्तों को प्रतिपादित करके वर्तमान विज्ञान की कुछ गम्भीर समस्याओं को नहीं सुलझा दूंगा, तब तक मेरी बातों पर यह देश कभी विश्वास नहीं करेगा, फिर विदेशी तो कैसे करेंगे? इस कारण मैं आज देश वासियों को विश्वास दिला रहा हूँ कि वर्तमान विकसित भौतिक विज्ञान की उपर्युक्त समस्याओं का समाधान वैदिक विज्ञान से हो सकेगा, मुझे ऐसा ईश्वर कृपा से विश्वास है। वैदिक विज्ञान अनुसंधान लुप्त परम्परा को मैंने ईशकृपा से खोज लिया है, ऐसा मेरा विश्वास है।** मैं अभी ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण का वैज्ञानिक भाष्य कर रहा हूँ, जो सम्भवत: विश्व में प्रथम बार हो रहा है। यदि किन्हीं महानुभाव को ऐतरेय ब्राह्मण के किसी अन्य वैज्ञानिक (आधिदैविक) भाष्य की जानकारी हो तो देने की कृपा करें। भाष्य पूर्ण होने से पूर्व कुछ भी प्रकाशित वा उद्घाटित नहीं करूंगा। उसके पश्चात् मैं भारत सरकार विशेषकर **प्रधानमंत्री जी से मिलकर बताना चाहूँगा कि भारत जगद्गुरु ऐसे वैदिक विज्ञान द्वारा मार्गदर्शित उच्च विकसित वर्तमान विज्ञानादि विद्याओं के आधार पर बनेगा, जिससे हम वर्तमान अत्यन्त विकसित मूलभूत भौतिक विज्ञान के गम्भीर समस्याओं का समाधान कर सकें। जिसके आधार पर वर्तमान विज्ञान के ब्रह्माण्डीय प्रेक्षण भी संशोधित किये जा सकें। सृष्टि उत्पत्ति, परमाणु व कण भौतिकी के कई रहस्य सुलझ सकें। काल-स्पेस-बल-ऊर्जा के रहस्य उद्घाटित हो सकें। मुझे विश्वास है कि ईशकृपा से अनुकूलता रही तो आगामी ३-४ वर्षों में इस कार्य की नींव रख दूंगा,** फिर भारत सरकार चाहे तो उस पर महल खड़ा करने हेतु इस महत्वाकांक्षी योजना को अपनाकर प्रधानमंत्री जी के भारत को जगद्गुरु बनाने तथा मानव संसाधन विकास मंत्राणी श्रीमती स्मृति ईरानी के वेदादि शास्त्र पढ़ने के स्वप्न को साकार कर सकें। ध्यातव्य है कि मेरे यह सब लिखने का अर्थ यह नहीं कि आधुनिक विज्ञान का अध्ययन बंद कर दिया जाये। नहीं-२ यह अध्ययन और भी उच्च स्तर पर हो और **प्रतिभाशाली वैज्ञानिक ही प्रतिभाशाली वैदिक विज्ञानियों के साथ मिलकर वैदिक साहित्य का अध्ययन करें, तभी वैदिक विज्ञान प्रकाशित होगा।** मेरे ऐतरेय ब्राह्मण के भाष्य को अनेक वैदिक विद्वान् समझ ही नहीं पाते हैं जबकि दिल्ली विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान के सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ. एम. एम. बजाज जिनकी मैडी-फिजिक्स क्षेत्र में अन्तराष्ट्रिय ख्याति है, मेरे पास पधारे तो मेरे भाष्य के दो पृष्ठ खड़े-२ पढ़ कर तत्काल ही बहुत कुछ समझ गये। इस कारण मेरा मत है कि **मेरे भाष्य को भौतिक विज्ञानी एवं वैज्ञानिक प्रतिभा के धनी अध्यात्मवेत्ता ही समझ पायेंगे। उस समय कोई कथित सैक्यूलरवादी वा नास्तिक कोई भी ऐसे वैदिक विज्ञान का विरोध नहीं कर सकेंगा,** तब हम संसार को भगवान् मनु के शब्दों में कह सकेंगे-

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन:।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा:।।

अर्थात् संसार के लोगों को चरित्र व विज्ञान की शिक्षा लेने हेतु भारतीयों के पास आना चाहिए।

अध्यक्ष, **श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास**
आचार्य, वेद विज्ञान मन्दिर
(वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान)
भागलभीम, भीममाल, जिला-जालोर
(राजस्थान) भारत पिन - ३४३०२९
दूरभाष- ०२९६९२९२१०३, ०९४१४१८२१७३
Website : www.vaidicscience.com
E-mail : swamiagnivrat@gmail.com

।।ओ३म्।।

"वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द"

खुशहाल चन्द्र आर्य

यह तो मैंने कई पुस्तकों में पढ़ा है कि मध्यकालिक साम्प्रदायिक आचार्यों जिनमें, सायण, उव्वर व महीधर मुख्य है। इन्होंने वेद-मन्त्रों का भाष्य, मन्त्रों के देवता, छन्द, पद, पदार्थ व सन्दर्भ आदि की उपेक्षा करके मन्त्रार्थ को विनियोग के अनुसार भाष्य किया है जिससे अर्थ का अनर्थ हो गया है। जैसे वेदों में "गोवध" आया है। इन अचार्यों ने "गोवध" का सीधा अर्थ गो का वध करके यज्ञों में डालना कर दिया। इसी अर्थ से यज्ञों में पंशुबलिका प्रचलन हो गया जिससे महात्मा बुद्ध जैसे लोगों का ईश्वर, वेद और यज्ञों के प्रति श्रद्धा भाव उठ गया। महर्षि दयानन्द ने बताया कि गो के कई अर्थ होते हैं। गाय के अतिरिक्त, सूर्य की किरण, इन्द्रियाँ, वाणी आदि को भी गो कहा जाता है। यहाँ गो का तात्पर्य इन्द्रियाँ है, यानि इन्द्रियों पर संयम रखना "गो वध" होता है। इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने वेदों की रक्षा की।

पूज्य आचार्य पं. उमाकान्त जी उपाध्याय ने एक पुस्तक लिखी है, जिसका नाम है "वेद और दयानन्द"। इस पुस्तक में आचार्य जी ने "विनियोग" को बहुत अच्छी प्रकार समझाया है। इस पुस्तक को पढ़कर मैंने भी विनियोग को काफी समझा है। अन्य पाठकगण भी इसको समझ पायें इसलिए उसी पुस्तक का एक अंश मैंने एक लेख के रूपमें उद्घृत किया है, वह इसी भाँति है:-

वेद और विनियोग:- स्वामी दयानन्द ने वेदों के सम्बन्ध में प्रचलित अनेक भ्रमों, अन्धविश्वासों ऐतिहासिक भूलों आचार्यों की मान्यताओं के विपरीत भाष्यों में भूलों का निराकरण किया है। वेद भाष्यों के सम्बन्ध में सायणा चार्य आदि मध्यकाल के भाष्यकर्ता आचार्यों ने मन्त्रों विनियोग के प्रसंग में भूल की है। आचार्य सायण, आचार्य उव्वर, आचार्य महीघर आदि ने विनियोगों के आधार पर मन्त्रों का अर्थ किया है। वेद में आये हुए मन्त्रों में पद, पदार्थ, देवता, आदि का विचार करके अर्थ करना समीचीन होगा। किन्तु इन मध्यकालिन साम्प्रदायिक आचार्यों ने उनके समय में प्रचलित विनियोगों के आधार पर मन्त्रों के अर्थ किये हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि इन आचार्यों ने मन्त्रों के पद, पदार्थ, सन्दर्भ आदि सबकी उपेक्षा करके मन्त्रार्थ को विनियोग के अनुसार भाष्य किया। अब देखना यह है कि विनियोग है क्या और कैसे वह मन्त्रों से अर्थो को प्रभावित करता है।

विनियोग क्या है: विनियोग शब्दमें वि + नि + योग हैं। शब्द है जिसका अर्थ है जुड़ना, मिलना जोड़ना आदि (युजिर योग धातु है) वि और नि उपवर्ग है। वि का अर्थ है विशेष रूप से और नि का अर्थ है निश्चित रूप से/सो किसी मन्त्र को किसी कार्य में किसी कर्म काण्ड में विशेष प्रकार से निश्चित रुप से जोड़ लेना, उस मन्त्र का उस कर्मकाण्ड में विनियोग है। उदाहरण के लिए आर्य परम्परा मे सोलह संस्कारों में कर्णवेध एक संस्कार है। इस कर्णवेध संस्कार में शिशु के कान के निचले भाग ललरी को दींचा दिया जाता है। उसमें छेद किया जाता है। जिस समय कान में छिद्र किया जाता है, उस समय निम्न मन्त्र का पाठ किया जाता है।

"भद्रंकर्णेभिः श्रृणयाम देवाः भद्रं पश्ये माक्षिभिः यजत्राः।
स्थिरै रङ्गे सतुष्टुवासंस्त नू भिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। यजु. २५-२८

इसका तात्पर्य यह हुआ कि "भद्रं कर्णे मेः श्रृणुयाम" इस मन्त्र का विनियोग कर्णवेध नामक संस्कार में हुआ है। सो विनियोग का अर्थ हुआ- किसी संस्कार में , किसी यज्ञकार्य में, किसी कर्मकाण्ड में, किसी अवसर विशेष पर, किसी मन्त्रका पाठ करना या उस मन्त्र को पढ़कर कोई कर्मकाण्ड करना या यज्ञ में आहुति डालना।

मध्यकालिन आचार्यों का मतः- सायणाचार्य आदि मध्यकालिन आचार्य की मान्यता यह है कि मन्त्रों के भाष्य या अर्थ उनके विनियोग के अनुसार करना चाहिए। सोहन मध्यमालिन आचार्यों का सिद्धान्त हुआ कि अर्थ या भाष्य को मन्त्र के विनियोग का अनुगामी होना चाहिए।

स्वामी दयानन्द का मतः- स्वामी दयानन्द का कहना है कि मन्त्रार्थ को विनियोग से स्वतन्त्र होकर उसके प्रकरण सन्दर्भ पद, पदार्थ के अनुकूल करना चाहिए। इसका तात्पर्य यह हुआ कि मन्त्रार्थ अपने सन्दर्भ में विनियोग से स्वतन्त्र है और विनियोग मन्त्रार्थ का अनुगामी रहे।

मध्य काल के आचार्यों के मत में विनियोग स्वतन्त्र है और मन्त्रार्थ को विनियोग के पीछे चलना चाहिए। स्वामी दयानन्द की मान्यता है, मन्त्रार्थ अपने सन्दर्भ, पद, पदार्थ के अनुसार स्वतन्त्र रहना चाहिए और विनियोग मन्त्रार्थ का, मन्त्रों के अर्थो की भावनाओं के अनुकूल होना चाहिए। अर्थात् विनियोग को मन्त्रार्थ का अनुगामी होना चाहिए, मन्त्र के अर्थ के पीछे चलना चाहिए।

कर्ण वेध संस्कार में "भद्रंकर्णे भिः श्रृणुयाम" इत्यादी का विनियोग इस लिए है कि इस मन्त्रों का अर्थ है कि हम (कर्णेभि) कानो से भद्र सुने (श्रृणुयाम) किन्तु तब भूल हो जाती है जब हमारे भाष्यकार यह कहने लग जाते हैं कि यह मन्त्र है ही का वेध के लिए। मन्त्र में और भी अनेक कुछ है।

मन्त्र का पूरा अर्थ इस प्रकारे है- हे यजत्रादेवाः। हे यजनीय, सत्करणीय, दिव्यगुण विशिष्ट परमेश्वर! हम कानों से भद्र सुने, आँखों से भद्र कल्याण कारी ही देखें, हम सुदृढ़ स्वस्थ अंगों से आपकी स्तुति करते हुए पूर्ण आयु को प्राप्त करें। इस मन्त्र में कानो से भद्र सुनने, आंखो से भद्र देखने और स्वस्थ दृढ़ अंगों से प्रभु से प्रभु परमेश्वर की प्रार्थना करते हुए पूर्ण आयु प्राप्त करने की प्रार्थना है। कान के छिद्र करने की तो कोई बात है ही नहीं। पाठक यह सहज अनुमान कर सकते हैं कि मन्त्र के अर्थ या भाष्य को मन्त्र के देवता, छन्द, पद, पदार्थ के अनुसार कहना ही उचित हैं। मंत्रार्थ को विनियोग के पीछे चलाना या पद-पदार्थ की उपेक्षा करके विनियोग के अनुसार अर्थ को तोड़ना-मरोड़ना अन्याय है। मन्त्रर्थानुसार ही विनियोग

उचित है, न कि विनियोग के अनुसार अर्थ। अन्तत: किसी मन्त्र का कहाँ, किस कर्मकाण्ड में विनियोग हो कहाँ विनियोग नहीं, यह एक महत्त्वपूर्ण समस्या है। मन्त्र तो अपौरूषेय है, परमेश्वर ने मानव के कल्याणार्थ उन्हें प्रदान किया। किस मन्त्र में क्या पद है, क्या छन्द है, क्या पूर्व है, क्या पर है, ये सब प्रभु प्रदत्त होने के कारण प्रश्न कोटि से उपर हैं। किन्तु कर्म काण्ड और उनमें करणीय क्रियाए, क्रियाओं में पढनीय मंत्र, किस मन्त्रको पढ़कर कौन सी क्रिया की जाय, यह सब निर्णय-निर्धारण ऋषियों ने परवर्ती काल में किया है। चारों संहिताओं में बीस हजार से अधिक मन्त्र हैं। कोइ भी मन्त्र कहीं भी नहीं पढ़ा जाता। कहाँ, किस कर्म में किस मन्त्र को पढ़ा जाये? बीस हजार से अधिक मन्त्रों में से चुनना है, यह सब परवर्ती काल में ऋषियों ने निर्धारित किया है। उनके चुनने का आधार तो मनमानी हो नहीं सकता, कोई आधार तो होना ही चाहिए, और वह आधार अर्थ को छोड़कर अन्य तो होना ही नहीं चाहिए। अत: अर्थ के आधार पर ही विनियोग होना उचित है। किसी भी मंत्र का कहीं भी विनियोग मनमानी करकेफिर मन्त्रार्थ को विनियोग के अनुसार करना तो अनुचित है, अन्याय है। किन्तु दुर्भाग्य है कि सायण, महीधर आदि आचार्यों ने विनियोग के अनुसार मंत्रों का अर्थ किया है।

इस लेख से जान लिया गया कि मध्यकालीक आचार्यों ने जो वेद-भाष्य किये, वे गलत इसलिए हो गये कि उन्होंने मन्त्रों का केवल विनियोग देखकर ही भाष्य कर दिया, जब कि उनको मन्त्र का देवता, छन्द, पद, पदार्थ व सन्दर्भ यानि किस प्रकरण में यह मन्त्र लिखा गया है। यदि यह देखकर भाष्य करते तो उनका भाष्य भी गलत नही होता। पर महर्षि दयानन्द ने इस सब बातों का ध्यान रखते हुए, अपने वेद-भाष्य किये हैं। इसीलिए वे सही व उत्तम हैं और तर्क व विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरते हैं। यह महर्षि का मनुष्य -मात्र पर एक अनुपम उपकार है, इसीलिए महर्षि को वेदोद्धारक माना गया है।

C/o गोविन्द राम आर्य अण्ड सन्स,
१८० महात्मा गान्धी रोड,
Ph. -2218 3825, 6450 5013
Offi. :2675 8903 (Resi) 033
M : 9830135794

विचार शक्ति का चमत्कार

(कर्म-फल सिद्धांत)

प्रिय पाठको,

प्राय: हम दुखों खे दूर रहना चाहते हैं और सच भी यही है कि हमारे जीवन का उद्देश सुख, शान्ति और आनन्द प्राप्त करना है यानि दु:खो से दूर रहना लेकिन जब हमारे कर्म वशात हमें दु:ख प्राप्त होता है तब हमे क्या करना चाहिए आइये इस पर विचार करें। प्रथम तो हम यह समझ ले कि दु:ख और सुख केवल हमारी मानसिक अवस्था का नाम है। जो भी फल हमारी इच्छा के अनुरूप या हमारे विचारों के अनुरुप प्राप्त हो वह हमारे लिए सुख है और इसके विपरीत दु:ख है। परमात्मा कभी दु:ख नहीं देता।

(१) दु:खो को सहन करो:- सर्व स्वीकार के भाव के अनुसार ईश्वर से प्रार्थना करो कि हे प्रभु हमे इस दु:ख के साथ साथ इसे सहन करने की शक्ति भी देना ताकि हमारी सहन शक्ति भी बढ़े।

(२) दु:ख में ही सुख का अनुभव करो :-

जब भी दु:ख आता है तो यही सोचो कि मेरे ही बुरे कर्मो का फल है जिससे मैं मुक्त हो रहा हूँ। मैं ही इस दु:ख का कारण हूँ। मेरे ही बुरे कर्म कट रहें है।

अपने दु:खो की वजह को दुसरों पर ढकेलने की कोसिस नहीं करनी चाहिए बल्कि स्वयं को इसका कारण समझाना चाहिए।

में अपने आप से दूर नहीं आ सकता इसीलिए अपने आप को समझाते हुए दु:खो से लड़ने की क्षमता उत्पन्न करनी चाहिए।

(३) आगे के लिए अच्छे कर्म करो :-

अब जो दु:ख सो हुआ आगे के लिए अच्छे कर्म करो ताकि यह दु:ख दोबारा न आवे परमात्मा भी दयालु इसी तजह से है ताकि जैसा बोया वैसा ही काटना है ताकि आगे के लिए हम अच्छा बोये और अच्छा काटें कोई मौलवी, पंडित, ज्योतिश यह नही बताता कि कर्मसुधारो बल्कि टोने टोरके और उपाय बताते रहते है।

(४) वकत का इंतजार करो :-

जितना हमारा भोग काल है उतना भोगना ही पडेगा जिनके बाद हमारा जीवन निविघ्नि सुखो में डूब्बता चला जाएगा। श्री राम को भी चौदा वर्ष के वनवास का पूरा काल भोगना ही पड़ा था।

राज कुमार भगवतीप्रसाद गुप्ता

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में बोधोत्सव का आयोजन

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन सोमवार, मंगलवार, बुधवार 16,17,18 फरवरी 2015 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनाये। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की और से होगी।

राम नाथ सहगल- मन्त्री

-: यज्ञ: वैदिक संस्कृति की आधार शिला :-

– जगदेवसिंह ठाकूर

वैदिक संस्कृति की आधार शिला 'यज्ञ' है। भारत के इतिहास में यज्ञ की अनुपस्थिति कभी नहीं रही भले ही उसका विकृत रुप ही क्यों न अस्तित्व में रहा हो। यज्ञ हिंसा और अश्लीलता के धिनौते, क्रूरतमद रूप में भी सामने आये। आज भी हमारे धर्म में यज्ञ की उपस्थिति विद्यमान है पर ये यज्ञ हमारे सांस्कृतिक उत्कर्षक प्रतीक नहीं रहे। कोई भी धार्मिक विधि विवाह आदि संस्कार बिना हवन के सम्भव नहीं हैं। हमारे सनातनी पुरोहित उसका निर्वाह अनिवार्य रूप से करते हैं। इन हवनों में हिंसा और अश्लीलता को कोई स्थान नहीं रहता। ये पुरोहित हमारे धन्यवाद के पात्र है।

आइए यज्ञ संस्कृति पर एक दृष्टि डालें।

मुंचामित्वा हविषा जीवनाय कमज्ञातयक्ष्मा दुत राज यक्ष्मीती ग्राहिर्जग्राह यद्यतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्रमुमुक्तमेनम् ।।अ.३/११।।

हे मनुष्य तुझे अज्ञात रोग से और क्षय रोग से निवृत करके सुखमय जीवनके लिए हवन के द्वारा कुड़ाता हूँ। इस रोगी को न छोड़नेवाले रोग ने पकड़ रखा है। उस पीडा से इसको विद्युत और अग्नि अथवा वायु और सूर्य छुड़ा सकते हैं।

(२) सहस्राक्षेण शत वीर्येण शतायुषा हवि षाहार्ष मेनम।

इंद्रोयथैन शरदो नया त्यति विश्वस्य दुरितस्य वारम्।। अ. ३।।११।।

सहस्र औषध दार्थों से युक्त सैकड़ो प्रकार के गुण करने वाले, सौ वर्ष की आयु बढ़ानेवाले हवन के द्वारा इसको मैं लाया हू। आत्मा जिसको इस प्रकार सौवर्ष की आयु तक ले जायगा और और सम्पूर्ण दोषों के पार पहुँचायेगा वैसा मैं करता हूँ। भाष्यंकार ब्रह्मर्षि श्रीपाद दामोदर सातवलेकर। वाल्मीकीय रामायण में ऋष्य शृंग द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ करने पर राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न के जन्म सर्वश्रुत हैं।

'भगवान राम ने राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान किया। वैदिक संस्कृति के अनुसार पत्नी के बिना यज्ञ हो नही सकता। एक पत्नी व्रती राम दूसरा विवाह करने के लिए तैयार नही है। अन्तत: सीता की स्वर्ण मूर्ति स्थापित की गयी। १२ वर्ष से सीता वाल्मीकि ऋषि के आश्रम में निवास कर रही हैं। राम राजा होते हुए भी सीता के अभाव में एकाकी जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

राजसूय यज्ञ में दूर-दूर से ऋषि मुनि ब्राह्मण, राजामहाराजा पधारे है। वाल्मीकि ऋषि के साथ सीता और उनके पुत्र लव, कुश भी इस यज्ञ में आये है। यहां सीता राम का नाम लेते हुए अपनी जीवनलीला समाप्त कर देती हैं और राम सीता के अभाव में राजगद्दी त्याग देते हैं।

यज्ञ संस्कृति का कैसा दिव्य भव्य रूप प्रदर्शित हुआ है। रामायण काल में।

आइए अब थोड़ा यहाँ आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व यज्ञ के सन्दर्भ में महाभारत काल पर विचार करें।

गीता के अनूसार योगिराज कृष्ण कहते हैं– ''यज्ञ की भावना से जो कर्म किया जाता है उस में बन्धन नहीं रहता। इसलिए हे कुन्ती पुत्र! आसक्ति छोड़कर सदा कर्म करते रहो। प्रजापति ने प्राचीन काल में यज्ञ की भावना से प्राणियों को उत्पन्न किया था। यज्ञ की भावना से काम करने पर यज्ञ तुम्हारी इच्छा पूर्ण करेगा। तुम एक दुसरे के साथ यज्ञ की भावना से व्यवहार करो। प्राप्त पदार्थों को दूसरे को दिये बिना भोग करे, तो वह चोर है। (३-१२)

''सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं। अन्न वृष्टि से, वृष्टि यज्ञ से और यज्ञ विहित कर्मों से उत्पन्न होता है। कर्म समुदाय को तू वेद से उत्पन्न और वेद को अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न हुआ जान। सर्व व्यावी परम अक्षर परमात्मा यज्ञ में प्रतिष्ठित है। (गीता) ३/१४,१५

''जिस यज्ञ में अर्पण आदि हवन के द्रव्य भी ब्रह्म है, ब्रह्ममय कर्ता द्वारा में स्थित रहनेवाले योगी द्वारा प्राप्त किये जाने योग्य फल भी ब्रह्म ही है।

''परब्रह्म पर आत्मारूप अग्नि में यज्ञ के द्वारा ही आत्मरूप यज्ञ का हवन किया करते हैं।-गीता ४-२५

''योगीजन इन्द्रियों की सम्पूर्ण क्रियाओं को प्राणों की समस्त क्रिया ज्ञान से प्रकाशित आत्म संयम योगरूप अग्नि में हवन किया करते हैं।- गीता ४-२७।

इस प्रकार गीता ने यज्ञ में युगानुरूप नवीन अर्थों को समाविष्ट कर यज्ञ शब्द की प्रभविष्णुता में अभूतपूर्व पर दी है।

प्रख्यात वैदिक विद्वान सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार अपने गीता भाष्य में योगी अरविन्द, ब्रह्मर्षि श्रीपाद दामोदर सातवलकर, लोकमान्य तिलक और आचार्य विनोबा भावे के गीतासम्बन्धी विचारो को उद्घृत करते हुए 'यज्ञ' शब्द पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं–

''गीता में यज्ञ शब्द का नवीन अर्थ आत्मसमर्पण है। यह संसार एक यज्ञ है। आत्म समर्पण का दृष्टांत है। सूर्य, पृथ्वी, वायु अग्नि समर्पण का उदाहरण हैं। यह संसार प्ररार्थ की भावना से ही चलेगा।

''गीता के अनुसार निष्काम कर्म ही यज्ञ हैं। निष्काम भावना का अर्थ है स्वार्थ त्याग, कामना का त्याग। परो पकार के लिए जीवन देना''

युग और समय की आवश्यकता के अनुसार पुराने शब्दों मे नवीन अर्थ भरने की पद्धति हमारे देश में प्राचीन काल से ही चली आ रही है। महात्मा गांधी के शिष्टोत्तम आचार्य विनोबाजी वेदों के प्रकांड विद्वान थे। उन्होंने यज्ञ शब्दको अभूतपूर्व गौरव प्रदान किया। आज के युग के अनुरूप विनोबाजीने 'भूदान यज्ञ' को साकार किया। १३ साल कश्मीर से कन्याकुमारी और पंजाब से आसाम तक दो बार उन्होंने भूदान यज्ञ के लिए घर घर पदयात्रा की।

जाड़ा, गर्मी, बरसाद कभी यह यात्रा कभी रुकी नही। लोगो से भूदान

यज्ञ में भूमि प्राप्त कर भूमिहीनो में वितरित की।

अब हम यज्ञ-चिकित्सा विषय पर विचार करें।

'वेद' के अनुसार यज्ञ चिकित्सा मनुष्य केलिए वरदानरूप है। सांताक्रुज आर्य समाज को यह गौरव प्राप्त है कि समाज के दो निष्ठावान सदस्य डॉ.तारासिंह और श्री संदीप आर्य इस दृष्टि से कार्यरत हैं।

डॉ. तारासिंह आर्य एम.डी.ए.एम. यज्ञचिकित्सा के प्रयोगशील चिकित्सक हैं।

डॉ. तारासिंह का कथन है- वैदिक संस्कृति याज्ञिक संस्कृति है। यज्ञ की भावना वसुधैव कुटुम्बकम् और सर्वे भवन्तु सुखिनः को चरितार्थ करती है। भारत में १९वीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने यज्ञ की विलुप्त भावना को पुनर्जीवित किया। स्वामीजी के अनुसार यज्ञ में विद्वानों का सत्कार यथायोग्य शिल्प अर्थात रसायन जो कि पदार्थ विद्या उसमें उपयोग, विद्या दि गुणों का दान अग्नि होत्रि जिन से वायु वृष्टि जल, औषध की पवित्रता करके सबजीवों को सुख पहुँचाता है। इस प्रकार यज्ञ से जगत का उपकार होता है''

डॉ. महोदय कहते- 'इस शरीर से कोई अयतीय कार्य न करे। हम अपनी सम्पूर्ण इन्द्रियों से जो जानें और करें वह यज्ञ रूप हो'।

व्यक्ति और समाज की भलाई के लिए हो। शरीर का प्रत्येक अंग उसी प्रकार जीवन यज्ञ का साधन है। जिस प्रकार द्रव्य यज्ञ में की, सामग्री आदि साकल्य। मनुष्य के समस्त क्रिया काल यवज्ञमय न होने से मनुष्य के सब काम व्यक्ति और समाज के राक्षसी भावनाओ के द्वारा विषय, विचार और संघर्ष को ही जन्म देंगे।

डॉ. तारासिंह कहते है- यज्ञ धार्मिक अनुष्ठान या पूजापाठ ही नहीं है अपितु इससे पर्यावरण प्रदूषण दूर होता है और उससे भी अधिक भयंकर विचार प्रदूषण भी समाप्त होता है।

मन्त्रों के अर्थ चिन्तन उनका अभिप्राय हृदयंगम करने से आत्मिक भोजनतप्राप्त होता है।

''परमात्मारूपी अग्नि में जीवात्मा प्राण मन, बुद्धि एवं इन्द्रियों को समर्पित करना आत्मिक अग्निहोत्र कहलाता है''।

यज्ञ के माध्यम से यज्ञकर्ता राम वायु मंडल, जल तत्व समस्त पृथ्वी के प्राणी, अप्राणिजगत का कल्याण कर सकता है। इस का हवि पदार्थ परमाणुरूप होकर संसार में सभी को किसी न किसी रुप में प्राप्त हो जाता है। और उसे सुखी तथा स्वस्थ बनाता है।

डॉ. तारासिंहने अपनी पुस्तक 'अग्निहोत्र' में अग्निहोत्र की साधनसामग्री का विस्तार से वर्णन किया है।

यज्ञ का महत्व यज्ञ के जिन मन्त्रों की आहु तियाँ देते हैं उनमे किसी वर्ग विशेष के हितकी नहीं अपितु चर अचर सम्पूर्ण सृष्टि के कल्याणकी भावना निहित होती है।

अग्नि में जो आहुतियाँ हम देते है अग्नि उन्हें पवित्र सूक्ष्म शक्तिशाली बनाकर संसार के प्राणियों कोलौटा देती है। इसी प्रकार परमात्मा ने हमें जो शक्ति सम्पति दी है उसे संसार हित में प्रयोग करें।

यज्ञ महा विज्ञान है। वह सृष्टि विज्ञान, प्रकृति विज्ञान, वायुमंडळ शोधन विज्ञान, भेषजनिमणि विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, यंत्र विज्ञान आदि अनेक विद्या-विज्ञानों से ओतप्रोत हैं।

''वर्तमान प्रदूषण का एकमात्र हल यज्ञ है''।

यज्ञ कर्ता भौतिकता में फंस कर अन्धा नहीं होता वह अनेक कष्टों से बच जाता है।

वैदिक चिकित्सा-यज्ञ-यज्ञ वायुमंडल को शुद्धकर रोगों, महामारियों को दूर करता है। अथर्व वेद के अनुसार यज्ञ थेरेपी संसार की सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा पद्धति है जो मृत्यु के मुख से भी मनुष्य को छीन कर स्वस्थ बनाने की क्षमता रखती है।

अथर्ववेद में रोगोत्पादक कृतियों का वर्णन आता है। श्वास, वायु भोजन, जल द्वारा पहुँचकर, अथवा काटकर शरीर रोगी करते हैं। यज्ञ द्वारा कृमि विनाशक ओषधियों की आहुति देकर रोग कृमियों को विनष्ट कर रोगों से बचा जा सकता है।

डॉ. तारासिंह यज्ञ चिकित्सा के विशेषज्ञ हैं। उन्होंने विभिन्न रोगों के लिए यज्ञ में प्रयुक्त औषधियों का उल्लेख किया है। इन औषधियों का प्रयोज अपने रोगियों नित्य करते है।

याज्ञिक चिकित्सा की विशद जानकारी उनकी रचित पुस्तक से होती है। पुस्तक गागर में सागर लोकोक्ति साकार करती है।

अग्नि होत्र (यज्ञ) - लेखक **डॉ. तारासिंह आर्य,** एम.डी.
पता- वैदिक आरोग्य केन्द्र
सेक्टर ७-ए/८/००४ (स्वामी नारायण मन्दिर के सामने)
शांति नगर, मीरा रोड (पूर्व), मुंबई
फोन : ८१२७९४०

'यज्ञ थेरेपी'-

सांताक्रूझ आर्य समाज के मंत्री और उत्साही कार्यकर्ता श्री संदीपजी आर्य यज्ञ चिकित्सा के मर्मज्ञ और खोजी व्यक्ति हैं। आधुनिक चिकित्सा पद्धति एलोपैथी, यज्ञ चिकित्सा ही क्या किसी भी चिकित्सा पद्धति को मान्य नहीं करती/हजारों साल से आयुर्वैदिक चिकित्सा पद्धति जन-स्वास्थ्य का उत्तरदायित्व निभा रही है। वह कितने दुर्भाग्य की बात है कि स्वराज्य के बाद हम अपनी अनमोल विशेषताओं को तिलांजलि देते चले गये।

याज्ञिक चिकित्सा और आयुर्वैदिक चिकित्सा के प्रत्यक्ष अनुभवों को नकारा नहीं जा सकता। श्री सन्दीप जी की वेदना है कि भारत स्वतन्त्र हो गया, पर भारतीयता के दर्शन दुर्मिल हो गये।

एलोपैथी के अन्धानुकरण का परिणाम यह हुआ है कि एलोपैथिक दवाओं और रोगों में घातक स्पर्धा शुरू हो रही है। आधुनिक जीवन पद्धति में रोगो की भरमार है और उनके लिए नितनूतन दवाओं का आविष्कार हो रहा है। की दुकान पर दृष्टि डालिए, हजारों दवाइयाँ विद्यमान हैं। यह है पाश्चात्य आधुनिक जीवन पद्धति का परिणाम।

पाश्चात्य जीवन पद्धति का आक्रमण गाँवों पर भी हो चुका हैं। परन्तु जितने अंश में वह बचा हुआ है उतने अंश में जटिल रोगों के आक्रमण से

नूतन निष्काम पत्रिका वर्ष-५ अंक-८ मुम्बई अगस्त- २०१४ पृष्ठ-१६ मूल्य- रु. १/-

श्रावण २०७० (अगस्त २०१४) Post Date : 25-08-2014 MH/MR/N/136/MBI/-13-15 MAHRIL 06007/31/12/2015-TC पोष्ट आफिस : सांताक्रुज़ (प.)

आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई का मुखपत्र

संपादक : **संगीत आर्य**

मुद्रक एवं प्रकाशक : **चन्द्रपाल गुप्त द्वारा कृष्ण प्रिंटींग प्रेस,** २६, मंगलदास रोड, मुंबई-२. से मुद्रित कराकर आर्य समाज भवन, वी. पी. रोड, (लिंकिंग रोड़), सान्ताक्रुज़ (प.) मुंबई-४०० ०५४. से प्रकाशित किया। दूरभाष : २६६० २८००/२६६०२०७५/२२९३१५१८

प्रति,

टिकट

मुक्त है।

अफसोस इस बात का है कि हम भारत के शाश्वत मूल्यों को नकारकर घातक आधुनिकता को अपना रहे हैं।

भारतीय ज्ञान को उपहास्य निरूपित करनेवाली आधुनिकता के सामने हमारे संदीपजी आर्य याज्ञिक चिकित्सा की वैदिक पद्धति को स्थापित करने के लिए दृढ़ता पूर्वक अग्रसर हैं। हमारी अवदशा पर तीन ठगों की कहानी याद आती है।

तीन ठग थोड़ी-थोड़ी दूर पर बैठ गये। एक ब्राह्मण देवता बकरी लिए जा रहे थे। पहले ठग ने कहा, 'महाराज यह कुत्ता लिए कहां जा रहे हो?'

ब्राह्मण देवता ने चलते चलते कहा, 'कुत्ता नहीं बकरी है।'

आगे दूसरे ठग ने कहा, 'महाराज, 'कुत्ता लिए जा रहे हो।'

ब्राह्मण को शक हुआ, क्या यह कुत्ता है?'

आगे गया तो तीसरे ठग ने भी उससे कहा, 'महाराज कुत्ता लिए कहा जा रहे हो?

ब्राह्मणने सोचा यह कुत्ता ही है और उसे फेंक कर चला गया१ ठग बकरी ले गये।

हम लोग पाश्चात्य संस्कृति के मोह में अपनी अनुभूत सिद्धियों को त्यागकर दरिद्र होते जा रहे हैं। हमारी संस्कृति में आस्तिक भावना के सर्वत्र दर्शन होते है। इसीलिए प्रकृति के दोहन, और शोषण में हम विश्वास नहीं करते। नदी, पर्वत, जल, अग्नि, धरती, वन सभी का उपयोग त्यागपूर्वक करने की संस्कृति के हम पुजारी हैं। यह भावना हजारों साल से हमारे निर्वैर अस्तित्वका कारण है। हमारी प्रत्येक क्रिया में प्रकृति के संरक्षण की भावना रहती है। उसीमें हमारा कल्याण भी सन्निहित रहता है। यज्ञ चिकित्सा इसका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है।

बन्धुवर सन्दीप जी आर्य समाज के रत्न हैं जो इस मार्ग के पथिक हैं।

यज्ञिक चिकत्सा में आध्यात्मिक और सांसारिक जीवन के कल्याण कारी दर्शन होते हैं। पश्चिमी भौतिकवादी विचारधारा यज्ञ चिकित्सा को निरर्थक अज्ञानतामूत्मक व्यापार समझती है। ऐसी विपरीत परिस्थिति में भी श्री संदीपजी आर्य यज्ञ चिकित्सा का दीप प्रज्वलित कर रहे हैं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमने अपना कुछ रखा ही नहीं। अंग्रेजो का उच्छिष्ट, ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया। भारत की आयुर्वेदिक चिकित्सा में केवल गन्दे अखबारी कागज दवाई की पुड़िया बना देना भर रह गया। आयुर्वेदिक चिकित्सा के प्रभावशाली अंगों के नाम तक चिकित्सा पद्धति में विरमृत हो गये।

जब आयुर्वेद का यह हाल है तब यज्ञ चिकित्सा को कौन पूछता है भारतीयता में यज्ञ की मौलिकता स्वयंसिद्ध है। इस का मूलवेदो में है। आज भी भारतीय समाज में यज्ञ (अग्निहोत्र) प्रत्येक धामिर्क और सामाजिक कार्य में अनिवार्य है। गॉव आज विपन्न हो चुके हैं। कोईवस्तु वहां दुर्मिल नहीं है। हर वस्तु के लिए शहर दौड़ना पड़ता है। परन्तु अग्निहोत्र चल रहा है। अब आधुनिकीकरण ने समस्याएं पैदा कर दी हैं। घी के स्रोत गोवंश और मैं भैंसेनिरन्तर बढ़ते कसार्दूधरों में कट रहे हैं। यज्ञ की जो आदि वस्तुए अब शॉल में नहीं मिलती। चिकित्सा यज्ञ में विविध औषधियों का उपयोग होता है।

यज्ञ चिकित्सा डॉ. तारासिंह, श्री संदीपजी आर्य के क्रिया कलापों से साकार हुई। याज्ञिक चिकित्सा आज पुनश्च हरिओम से शुरू हो रही है। पर इससे निष्ठावान बन्धु अपने सीमित साधनों के द्वारा यज्ञ चिकित्सा की उपयोगिता सिद्ध करने में दत्तचित हैं।

श्री संदीपजी ने अपनी पुस्तक 'यज्ञ थेरेपी' में अपने प्रचुर अध्ययन का निचोड़ उपस्थित किया है। यज्ञ के लिए अध्वर शब्द ही असन्दिग्ध रूप से अहिंसा की घोषणा कर रहा है। लेखक ने वेद के आधार पर यज्ञो के अहिंसामय रूप को उजागर किया है।

आज कल कारखानों के विषैले रासायनिक उत्पादों रासायनिक खादों और कीटनाशकों के द्वारा खेती को विषाक्त बना दिया गया है। जल, धरती सभी दूषित हो गये हैं। पर्यावरण विषाक्त हो गया है। ग्लोबल वार्मिंग के कुफल, काल की तरह चतुर्दिक मुँह नाये खडे हैं। इस संकट से बचाव के लिए यज्ञों का प्रचलन सर्वोत्तम उपाय है। श्री संदीपजी आर्य ने यज्ञों की उपयोगिता को बड़ी दृढ़ता से उपस्थित किया है।

यज्ञ द्वारा विविध रोगों की चिकित्सा के योग पुस्तक में विद्यमान हैं। यज्ञ थेरेपी पुस्तक अपने विषय की अनुपम पुस्तक है। पुस्तक आचरणीय और संग्रहणीय है।

यज्ञथेरेपी- ले. संदीप आर्य। पृ. २३४ मूल्य ११० रु

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द

४४०८, नई सड़क, दिल्ली ११०००६

आर्यसमाज सांताक्रुज में भी पुस्तक उपलब्ध है।